अट्ठंग-जोगो

(अष्टांग योग)

आचार्य वसुनन्दी मुनि

ग्रंथ	:	अट्ठंग-जोगो (अष्टांग योग)
मंगल आशीर्वाद	:	परम पूज्य श्वेतपिच्छाचार्य श्री 108 विद्यानन्द जी मुनिराज
ग्रंथकार	:	अभीक्षण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज
संपादन	:	आर्यिका वर्धस्वनंदनी
प्राप्ति स्थान	:	• श्री जम्बूस्वामी तपोस्थली, बोलखेड़ा (कामां) राजस्थान
संस्करण	:	द्वितीय 1000 (सन् 2021)
प्रकाशक	:	निर्ग्रंथ ग्रंथमाला समिति (पंजी.)
मुद्रक	:	पारस प्रकाशन, दिल्ली मो.: 9811374961, 9818394651, 9811363613 pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

संपादकीय

ज्ञानाद्वितं वेत्ति ततः प्रवृत्तिं, रत्नत्रये संचित कर्म मोक्षः।
ततस्ततः सौख्यमबाध मुच्चैस्तेनात्रयत्नं विदधाति दक्षः॥

मनुष्य ज्ञान से हित को जानता है, हित का ज्ञान होने से रत्नत्रय में प्रवृत्ति करता है, रत्नत्रय में प्रवृत्ति करने से संचित कर्मों से मोक्ष होता है और संचित कर्मों के मोक्ष से निर्बाध उत्तम सुख की प्राप्ति होती है, इसलिये चतुर मनुष्य ज्ञान में प्रयत्न करते हैं।

भव्य-नराः ज्ञानरथाधिरूढाः, व्रजन्ति शीघ्रं शिवपत्तनञ्च।
अज्ञानिनो मौढ्यरथाधिरूढाः, व्रजन्ति श्वभ्राभिधपत्तनं वै॥

ज्ञान रूपी रथ पर सवार हुए भव्य जीव शीघ्र मोक्षरूपी नगर को प्राप्त होते हैं और मूर्खतारूपी रथ पर सवार हुए अज्ञानी जीव निश्चय से नरकरूपी नगर को प्राप्त होते हैं।

चेतना के क्षितिज पर उदीयमान सम्यग्ज्ञान का आदित्य अज्ञान रूपी तम को तिरोहित कर वस्तु का सम्यक् अवबोध कराने में समर्थ होता है और सम्यग्ज्ञान का यह मिहिर श्रुताभ्यास स्वाध्याय से तेजस्विता को प्राप्त होता है। ''सम्यग्ज्ञान का वह सूर्य कषायों का अवशोषण, भोग रूपी कीटाणुओं का नाश, सम्यगावबोध का प्रकाश फैलाता है।'' स्वाध्याय में निरत व्यक्ति के लिये मोक्ष रूपी दुर्ग तक पहुँचने में बाधक संसार का यह दुर्गम व दुर्लंघ्य सा प्रतीत होने वाला गिरी राईवत् हो जाता है जिससे मोक्ष यात्रा सरल व सुगम हो जाती है।

अतः भव्य जीवों के हितार्थ आचार्य श्री ने मूलभाषा प्राकृत में

ग्रंथों का लेखन किया, जिससे भाषा को जीवंतता भी प्राप्त हो और सद्साहित्य के आलोक से संपूर्ण विश्व प्रकाशित हो सके।

यह ग्रंथ 273 गाथाओं में अनुबद्ध है। मात्र आसन या प्राणायाम का अर्थ योग नहीं। योग के भी अंग हैं–जिस प्रकार शरीर के आठ अंग, सम्यग्दर्शन के आठ अंग, सम्यग्ज्ञान के आठ अंग होते हैं उसी प्रकार योग के भी आठ अंग होते हैं। आठ में से एक का भी अभाव हो तो योग की पूर्णता उसका सम्यक् फल संभव नहीं। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि ये आठ अंग योग के कहे गए हैं। इनका सरल, सुंदर व श्रेष्ठ वर्णन आचार्य महाराज ने ग्रंथ के अंतर्गत किया है। देह स्वस्थता, आत्मस्वभावोपलब्धि इस योग के ही परिणाम हैं। योग की साधना करने वाला सफलता को भी उसके माध्यम से हस्तगत करने में समर्थ होता है। अष्टांग योग का फल लिखते हुये आचार्य महाराज ने स्वयं लिखा है–

सुत्थ-णाण-णंद-संति-सुहाण-वड्ढगो अट्ठंग-जोगो।
उच्छाह-सत्ति-समाहि-झाणाणं कारणं जाणह।।263।।

अष्टांग योग को स्वस्थता, ज्ञान, आनंद, शांति और सुख का संवर्धक उत्साह, शक्ति, समाधि व ध्यान का कारण जानना चाहिये।।

सत्तट्ठ-भवेसु अट्ठविह-जोगं जो कुणदि उक्कस्सेण।
जहण्णेण तम्हि भवे, मुत्तिं लहिदुं सो सक्केदि।।267।।

जो 8 प्रकार के योग को करता है वह अधिक से अधिक सात-आठ भव में, जघन्य से उसी भव में मोक्ष को प्राप्त करने में समर्थ होता है।

योग का अध्ययन करने वाले, उस पर शोध करने वाले विदेशी विद्वान् पूज्य गुरुवर के समीप ग्रीनपार्क दिल्ली में आये थे। इटली, जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया आदि स्थानों के विद्वान् उस योग के विषय में

जानने के उत्सुक थे। गुरुवर श्री ने उन्हें अष्टांग योग के विषय में समझाया और पुनः इस ग्रंथ लेखन को अपने बुद्धिचातुर्य, विषय निष्णातता के माध्यम से अल्पावधि में ही पूर्ण किया।

यदि इस ग्रंथ के संपादन में कोई त्रुटि रह गई हो तो विज्ञजन संशोधित कर पढ़ें, हंसवत् गुणग्राही दृष्टि से ग्रंथाध्ययन करें। जन-जन के श्रद्धापुंज परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य गुरुवर श्री वसुनंदी जी मुनिराज का संयम, तप, ज्ञान, साधना का सौरभ सहस्रों वर्षों तक संपूर्ण विश्व को सुरभित करता रहे। गुरुवर श्री को आरोग्य लाभ हो एवं अपने लक्ष्य को शीघ्र प्राप्त करें। परम पूज्य गुरुवर श्री के चरणों में सिद्ध-श्रुत-आचार्य भक्ति सहित कोटिशः नमोस्तु! नमोस्तु! नमोस्तु!.....।।

''जैनम् जयतु शासनम्''

श्री शुभमिति माघ शुक्ल दशमी
श्री वीर निर्वाण संवत् 2547
सोमवार 22.2.2021
श्री जम्बूस्वामी तपोस्थली-बौलखेड़ा,
कामां, भरतपुर (राज.)

आर्यिका वर्धस्वनंदनी

अनुक्रमणिका

मंगलाचरण 13
ग्रंथ हेतु व प्रतिज्ञा 14
योगीन्द्रों को नमस्कार 14
योग आवश्यक 15
अनादि रोग 15
त्रिविध योग 15
दुरुपयोग से हानि 16
जीव के योग 16
त्रियोगी की स्थिति 17
तिर्यंचों के व्रत 17
द्विविध मनुष्य 17
स्वहितार्थ समर्थ कौन? 18
दुर्लभ से दुर्लभ 18
नर पर्याय भी निरर्थक 19
चार पुरुषार्थ 19
मोक्ष 19
मोक्षमार्ग 20
द्विविध श्रेणी 20
सम्यक्त्व के हेतु 20
तत्त्व स्वरूप 21
द्रव्यों का तत्त्व 21
सम्यग्ज्ञान-स्वरूप 21
सम्यक्चारित्र-स्वरूप 22
अभेद रत्नत्रय धारक 22
योगी कौन? 22
आत्मरसास्वादी 23
ज्ञानलीन मंगल 23
लोकपूज्य योगी 23
अरिहंतावस्था का मूल 24
भव्य कहाँ रागी? 24
संयमी ही योगी 24
आत्माराधक 25
कर्मदाहक 25
अध्यात्म-संवृत 25
पंद्रहविध योग 26
मन व वचन योग 26
सप्तविध काय योग 26
अष्टांग योग 27
यम 28
यम का व्युत्पत्त्यर्थ 28
यम-स्वरूप 28
यम का माहात्म्य 29
यम फल ग्राहक 29
नियम-स्वरूप 31
नियम-माहात्म्य 31
सकल संयम का हेतु 32
व्यवहार भी आवश्यक 32
निश्चय भी आवश्यक 32

व्यवहार-निश्चय 33
नियम आवश्यक 34
मोक्ष सुख हेतु 34
नियम फल ग्राहक 34
नियम, यम का हेतु 35
आसन धारक कौन? 35
स्थिर आसन से निर्वाण 36
प्रशस्तासन 36
ध्यान हेतु आसन 36
आसन से मनस्थिरता 36
आसनाभ्यास आवश्यक 37
आसन से लाभ 37
स्वपरहितार्थ समर्थ कौन? 38
प्राणायाम की आवश्यकता 38
प्राणायाम का स्वरूप 39
श्वासोच्छ्वास दुरुपयोग नहीं 39
श्वांस नियंत्रण 40
त्रिविध प्राणायाम 40
प्राणायाम से लाभ 40
पूरकादि स्वरूप 41
रेचक से लाभ 41
कुंभकादि काल 41
पूरकादि फल 42
कुंभक प्राणायाम से लाभ 42
ध्यान सिद्धि 43
चदु मंडल 43
जैसा रूप वैसा फल 43
पार्थिव मंडल 44
पृथ्वी तत्त्व 44
वारुण मंडल 45
जल तत्त्व 46
वायुमंडल 46
अग्नि मंडल 47
अग्नि तत्त्व 48
आग्नेय मंडल प्रभाव 48
पुरंदर वायु 49
वरुण वायु 49
पवन वायु 50
ज्वलन वायु 50
चदु वायु प्रभाव 50
मंगलकारी पुरंदर वायु 51
दहन वायु प्रभाव 51
पवन वायु प्रभाव 51
वायु ग्रहण व त्याग प्रभाव 52
वाम छिद्र से प्रवेश वायु प्रभाव 52
दक्षिण छिद्र से प्रवेश प्रभाव 53
सूर्य वा चंद्र मार्ग से वायु 53
सूर्योदय में उत्तम स्वर 53
दिवसों में उत्तम स्वर 54
पिंगला नाड़ी 54
इड़ा नाड़ी 55
सुषुम्ना नाड़ी 55
सगुण व निर्गुण स्वर 55
स्वरानुसार प्रश्न फल 56
चंद्र स्वर में करने योग्य कार्य 56
सूर्य स्वर में करने योग्य कार्य 57
अंगुलियाँ तत्त्ववाहिका 58
पृथ्वी मुद्रा 58
जल मुद्रा 58
सूर्य मुद्रा 59
आकाश मुद्रा 59
वायु मुद्रा 59

वाम व दक्षिण नाड़ी प्रभाव 60
सर्वश्रेष्ठ मंडल 60
नाड़ी अनुसार विजय कथन 61
निमित्त द्वारा स्वास्थ्य फल 61
जय-विजय प्रश्न 61
हानि-लाभ कथन 62
वापिस लौटने रूप प्रश्न 62
युद्ध विषयक प्रश्न 62
वर्षा विषयक प्रश्न 63
धान्य विषयक प्रश्न 63
पूरक पवन में सम्मानीय जन 64
रिक्त स्वर में स्थापनीय 64
जन्म विषयक प्रश्न 64
गर्भ विषयक प्रश्न 65
स्वर परिवर्तन 65
निरोगी द्वारा श्वास ग्रहण 66
विशेषकार्यार्थ सुषुम्ना नाड़ी त्याज्य ...66
स्वरानुसार कदम 66
'हँ' बीज चिंतन 67
प्राणायाम में रंजायमान नहीं 68
आरोग्य कारण 68
योगी ध्येता 69
मोक्षार्थी को प्राणायाम बाधक 69
प्राणायाम-ध्यान खंडक 69
मात्र आसन-प्राणायाम हानि 70
देह पोषक संयम च्युत 70
आत्म धर्म विरोधी 70
पदभ्रष्ट 71
इंद्रियजय अभ्यास 71
प्रत्याहार स्वरूप 71
प्रत्याहार क्यों? 72
प्रत्याहार का मूल 72
उत्तम ध्याता 73
समाधि कारण 73
धारणा स्वरूप 73
ध्यान स्थान 74
कल्याण हेतु समर्थ 74
धारणा फल 74
ध्यान हेतु शुद्धि 75
प्रशस्त दिशा 75
दिशा प्रभाव 75
गुणस्थानों में ध्यान व शुभ भावना ..76
संहनन आवश्यक 76
उपशम श्रेणी हेतु संहनन 76
ध्यान धुरंधर 77
शुक्ल ध्यान प्रासक 77
ध्यान सामर्थ्य 77
स्थिर चित्त में निजावलोकन 78
कषाय शमन बिना ध्यान नहीं 78
ध्यान से दुःखांत 79
प्रशस्त ध्यान 79
कषाय से संक्लेशता 79
चतुर्विध ध्यान 80
धर्मध्यान भेद 80
आज्ञा विचय 80
अपाय विचय 81
विपाक विचय 82
संस्थान विचय 83
दशविध धर्मध्यान 84
धर्मध्यान स्वरूप 84
पिंडस्थादि स्वरूप 85
पंच धारणा 85

शुक्ल ध्यान 86
शुभ ध्यान फल 86
आधि-उपाधि-व्याधि त्याग 87
एकार्थवाची शब्द 87
समाधि का पात्र 87
समाधि स्वरूप 88
समाधि फल 88
अष्टांग योग में समाधि 89
विकारी भाव त्याग 89
स्थितप्रज्ञ-समाधिभाव-पात्र 90
आत्मगुणभोक्ता 90
समाधि बिना मोक्ष नहीं 91
योगियों का सार 91
शुक्लध्यान ही परमसमाधि 91
श्रेणी आरोहकों का ध्यान ही समाधि 92
उपचार से समाधि भाव 92
अष्टांग योग फल 92
अंतिम मंगलाचरण 94
ग्रंथकार की लघुता 95
प्रशस्ति 95

अट्ठंग-जोगो

(अष्टांग योग)

योग देह व आत्मा दोनों के लिये स्फूर्ति प्रदायक, आरोग्यकारक, दुःख-क्लेशनाशक व सुखशांतिवर्द्धक है। जीव के चरम व परम लक्ष्य को प्राप्त कराने हेतु "अष्टांगयोग" श्रेष्ठ रथ के समान है जिस पर आरुढ़ हो संसार की दुर्गम, विलंघ्य खातिकाओं को पार कर मोक्ष महल में प्रवेश पाया जा सकता है।

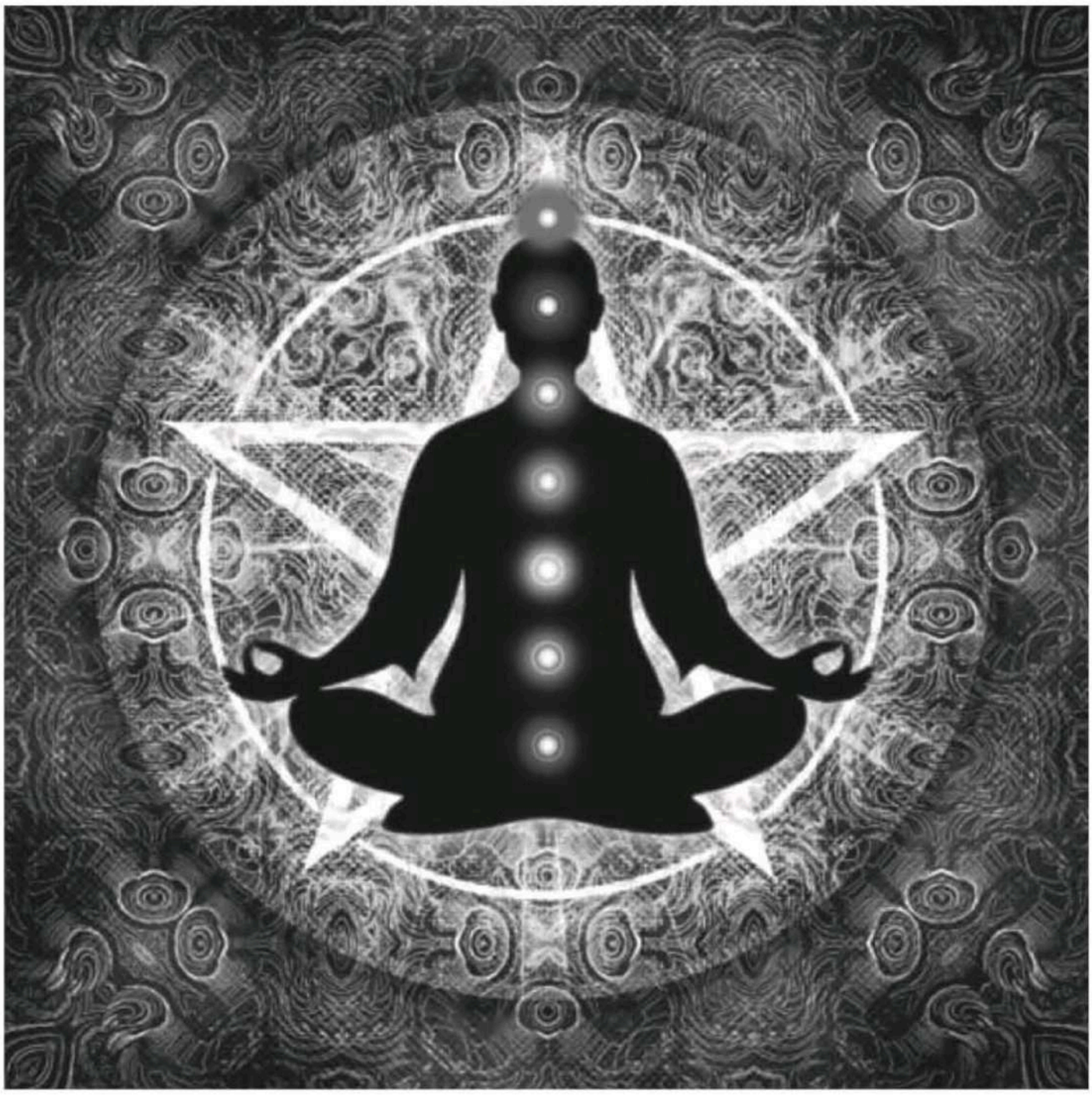

अट्ठंग-जोगो
(अष्टांग योग)

मंगलाचरण

वीयरायी केवली, सजोगी सव्वण्हु-हिदुवदेसगा।
जगपुज्जा तित्थयरा, कल्लाणालया णमंसामि।।1।।

अन्वयार्थ-कल्लाणालया-कल्याणों के आलय **वीयरायी**-वीतरागी **सव्वण्हू**-सर्वज्ञ **हिदुवदेसगा**-हितोपदेशी **सजोगी**-सयोग **केवली**-केवली **जगपुज्जा**-जगद्पूज्य **तित्थयरा**-तीर्थंकरों को **णमंसामि**-नमस्कार करता हूँ।

उसहादो वीरंतं, सव्व-सूरी उवज्झाया साहू।
तिजोग-साहग-जोगी, कम्मं खयेदुं च पणमामि।।2।।

अन्वयार्थ-उसहादो-श्री ऋषभदेव से लेकर **वीरंतं**-महावीर स्वामी तक (सभी तीर्थंकरों को) **सव्वसूरी**-सभी आचार्य **उवज्झाया**-उपाध्याय **साहू**-साधु **च**-और **तिजोग-साहग-जोगी**-त्रियोग साधक योगियों को **कम्मं खयेदुं**-कर्म क्षय के लिए **पणमामि**-प्रणाम करता हूँ।

गणहरुसहसेणादो, गोदम-पेरंतं सुदकेवली य।
वादि-पच्चक्खणाणी, पत्तेय-वुड्ढि-जुदा वंदे।।3।।

अन्वयार्थ-गणहरुसहसेणादो-श्री वृषभसेन गणधर से **गोदम-पेरंतं**-गौतम पर्यंत (सभी गणधरों) **सुदकेवली**-श्रुत केवली **वादि-पच्चक्खणाणी**-वादी मुनि, प्रत्यक्ष ज्ञानी **य**-और **पत्तेय-वुड्ढि-जुदा**-प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि से युक्त सभी मुनियों की **वंदे**-वंदना करता हूँ।

कुंदकुंदाइरियं च, सोमदेव-देवणंदि-अकलंका।
धरसेण-माहणंदी, समंतभद्द-सुहचंदा हं।।4।।

भद्दबाहु-जिणचंदा, णंदिमित्त-विण्हु-वीर-जिणसेणा।
गुणहरं पुप्फदंतं, भूदबलि-जदिवसहा वंदे।।5।।

अन्वयार्थ-विण्हुं-आचार्य श्री विष्णु **णंदिमित्तं**-नंदिमित्र **भद्दबाहुं**-भद्रबाहु स्वामी **माहणंदिं**-माघनंदी **धरसेणं**-धरसेन **गुणहरं**-गुणधर **पुप्फदंतं**-पुष्पदंत **भूदबलिं**-भूतबलि **जिणचंदं**-जिनचंद्र **कुंदकुंदाइरियं**-आचार्य कुंदकुंद स्वामी **जदिवसहं**-यतिवृषभ **समंतभद्दं**-समंतभद्र **देवणंदिं**-देवनंदी **अकलंकं**-अकलंक **वीरसेणं**-वीरसेन **जिणसेणं**-जिनसेन **सोमदेवं**-सोमदेव **तह**-तथा **सुहचंदं**-शुभचंद्राचार्य की **हं**-मैं (आचार्य वसुनंदी मुनि) **वंदे**-वंदना करता हूँ।

ग्रंथ हेतु व प्रतिज्ञा

भव्वजीव-हिदंकरं, णिवट्टीए तह असुहजोगादो।
सुद्धजोग-लद्धीए, अट्ठंग-जोगं णिरूवेमि।।6।।

अन्वयार्थ-असुहजोगादो-अशुभ योग से **णिवट्टीए**-निवृत्ति **तह**-तथा **सुद्धजोग-लद्धीए**-शुद्ध योग की प्राप्ति के लिए **भव्व-जीव-हिदंकरं**-भव्य जीवों के हितकर **अट्ठंग-जोगं**-अष्टांग योग का **णिरूवेमि**-निरूपण करता हूँ।

योगीन्द्रों को नमस्कार

भव-तण-भोय-विरत्ता, आदावणाइ-ति-जोग-संजुत्ता।
णियसुद्धप्पणुरत्ता, णमंसामि सव्व-जोगिंदा।।7।।

अन्वयार्थ-भव-तण-भोय-विरत्ता-संसार, शरीर, भोगों से विरक्त **आदावणाइ-तिजोग-संजुत्ता**-आतापन आदि तीन योग से संयुक्त **णियसुद्धप्पणुरत्ता**-निज शुद्धात्मा में अनुरक्त **सव्व-जोगिंदा**-सर्व योगीन्द्रों को (मैं) **णमंसामि**-नमस्कार करता हूँ।

योग आवश्यक

जोगं विणा णो को वि, जीवो सक्केदि हु भव-छिंदेदुं।
भोया भव-भय-हेदू, कम्म-दुक्ख-परिवड्ढगा तह।।8।।

अन्वयार्थ- **हु**-निश्चय से **जोगं**-योग के **विणा**-बिना **को वि**-कोई भी **जीवो**-जीव **भव-छिंदेदुं**-भव का छेद करने में **णो सक्केदि**-समर्थ नहीं होता। **भोया**-भोग **भव-भय-हेदू**-भव भय के हेतु **तह**-तथा **कम्म-दुक्ख-परिवड्ढगा**-कर्म व दु:खों के परिवर्द्धक हैं।

अनादि रोग

जम्म-मिच्चु-जरामया, अणादीदो विज्जंति जीवेसुं।
ते संसारी णियमा, सहंति अणंतदुहाणि सया।।9।।

अन्वयार्थ-जीवेसुं-जीवों में **अणादीदो**-अनादि से **जम्म-मिच्चु-जरामया**-जन्म, जरा, मृत्यु रूपी रोग **विज्जंति**-विद्यमान है। **ते**-वे **संसारी**-संसारी जीव **णियमा**-नियम से **सया**-सदा **अणंतदुहाणि**-अनंत दु:खों को **सहंति**-सहन करते हैं।

त्रिविध योग

जोगो तिविहो भणिदो, भेयादो मण-वयण-कायाणं च।
मणजोगी थोगहिया, पुण वय-काय-जोगी कमेण।।10।।

अन्वयार्थ-जोगो-योग **मण-वयण-कायाणं च**-मन, वचन और काय के **भेदादो**-भेद से **तिविहो**-तीन प्रकार का **भणिदो**-कहा गया है (उनमें) **मणजोगी**-मनोयोगी **थोगा**-स्तोक (थोड़े) हैं **पुण**-पुन: **वय-काय-जोगी**-वचन तथा काय योगी **कमेण**-क्रम से **अहिया**-अधिक हैं।

दुरुपयोग से हानि

कुणदि दुरुवजोगं जो, मण-वयण-काय-तिण्णि-जोगाणं च।
एगेग-जोगस्स वा, ता जीवो भमदि संसारे।।11।।

अन्वयार्थ-जो-जो **मण-वयण-काय-तिण्णि-जोगाणं च**-मन, वचन और काय तीनों योगों का **वा**-अथवा **एगेग-जोगस्स**-एक-एक योग का भी **दुरुवजोगं**-दुरुपयोग **कुणदि**-करता है **ता**-तो (वह) **जीवो**-जीव **संसारे**-संसार में **भमदि**-भ्रमण करता है।

जीव के योग

सव्वा थावर-जीवा, होंति सहिदा खलु कायजोगेणं।
ते अणंताणंता य, सेसा असंखेज्जा मेत्तं।।12।।

अन्वयार्थ-खलु-निश्चय से **सव्वा**-सभी **थावर-जीवा**-स्थावर जीव **कायजोगेणं**-काय योग से **सहिदा**-सहित **होंति**-होते हैं **ते**-वे **अणंताणंता**-अनंतानंत हैं **य**-और **सेसा**-शेष जीव **असंखेज्जा**-असंख्यात **मेत्तं**-मात्र हैं।

बेइंदिय-जीवादो, वयण-काया हु असण्णि-पेरंतं।
संखेज्जासंखेज्जा, मणजोग-रहिदा णेया ते।।13।।

अन्वयार्थ-बेइंदिय-जीवादो-दो इंद्रिय जीवों से **असण्णि-पेरंतं**-असंज्ञी पर्यंत (सभी के) **वयण-काया**-वचन व काय योग होता है। **हु**-निश्चय से **ते**-वे **संखेज्जासंखेज्जा**-संख्यातासंख्यात जीव **मणजोग-रहिदा**-मन योग से रहित **णेया**-जानने चाहिए।

सण्णी पंचिंदिया हु, णियमेण होज्ज तिजोग-संजुत्ता।
ते सवर-कल्लाणस्स, समत्था ण वियलजोग-जुदा।।14।।

अन्वयार्थ-सण्णी पंचिंदिया-संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव **णियमेण**-नियम से **तिजोग-संजुत्ता**-त्रियोग से सहित **होज्ज**-होते हैं **ते**-वे **हु**-ही

सवर-कल्लाणस्स-स्व-पर कल्याण के लिए **समत्था**-समर्थ हैं **वियलजोग-जुदा**-विकल योग से युक्त (जीव कल्याण के लिए समर्थ) **ण**-नहीं हैं।

त्रियोगी की स्थिति

तिण्णि-जोग-संजुत्ता, होंति चउगदीसुं जीवा णियमा।
परं मणुजो समत्थो, सवरहिदाय संजमेणं हि।।15।।

अन्वयार्थ-तिण्णि-जोग-संजुत्ता-तीनों योगों से संयुक्त **जीवा**-जीव **चउगदीसुं**-चारों गतियों में **णियमा**-नियम से **होंति**-होते हैं **परं**-किंतु **संजमेणं**-संयम के द्वारा **सवरहिदाय**-स्वपर का हित करने में **मणुजो**-मनुष्य **हि**-ही **समत्थो**-समर्थ है।

तिर्यंचों के व्रत

जीवा तिरिय-गदीए, होंति संजुत्ता अवि तिजोगेहिं।
गहेदुं अणुव्वदं ण, समत्था महव्वदं कया वि।।16।।

अन्वयार्थ-तिरिय-गदीए-तिर्यंचगति में **जीवा**-जीव **तिजोगेहिं**-तीनों योगों से **संजुत्ता**-संयुक्त **अवि**-भी **होंति**-होते हैं (और) **अणुव्वदं**-अणुव्रत **गहेदुं**-ग्रहण करने में **समत्था**-समर्थ हैं **महव्वदं**-महाव्रत (ग्रहण करने में) **कया वि**-कदापि (समर्थ) **ण**-नहीं हैं।

द्विविध मनुष्य

मणुजो दुविहो भणिदो, कम्मभूमिजो अकम्मभूमिजो य।
अकम्मभूमिजो वि तह, कुभोग-भोग-भूमिजा सया।।17।।

अन्वयार्थ-मणुजो-मनुष्य **दुविहो**-दो प्रकार का **भणिदो**-कहा गया है **कम्मभूमिजो**-कर्म भूमिज **य**-और **अकम्मभूमिजो**-अकर्मभूमिज **तह**-तथा **अकम्मभूमिजो**-अकर्मभूमिज **वि**-भी **सया**-सदा (दो प्रकार के हैं) **कुभोग-भोग-भूमिजा**-कुभोग भूमिज और भोगभूमिज।

स्वहितार्थ समर्थ कौन ?

कम्ममहीइ णरो जो, जम्मेदि उच्चजादीए कुलम्मि।
अवियल-देह-संजुदो, सत्थ-देह-दिग्घाउ-सहिदो।।18।।
लहदि उत्तम-संगदिं, जिण-सुद-णिग्गंथ-सण्णिवअं सो हु।
सहिदाय सक्कदि किच्चु, मिच्छत्ताइ-उवसमादिं।।19।।

अन्वयार्थ-**जो**-जो **णरो**-नर **कम्ममहीइ**-कर्म भूमि में **उच्चजादीए**-उच्च जाति **कुलम्मि**-कुल में **जम्मेदि**-जन्म लेता है **अवियल-देह-संजुदो**-अविकल देह से युक्त **सत्थ-देह-दिग्घाउ-सहिदो**-स्वस्थ देह व दीर्घ आयु से सहित होता है **उत्तम-संगदिं**-उत्तम संगति व **जिण-सुद-णिग्गंथ-सण्णिवअं च**-जिन, श्रुत और निर्ग्रन्थ साधु के सान्निध्य को **लहदि**-प्राप्त करता है **सो**-वह **हु**-निश्चय से **मिच्छत्ताइ-उवसमादिं**-मिथ्यात्व आदि का उपशम आदि **किच्चु**-करके **सहिदाय**-स्वहित के लिए **सक्कदि**-समर्थ होता है।

दुर्लभ से दुर्लभ

णिस्सरित्तु णिगोदादु, उप्पज्जणं ववहार-रासीए।
दुल्लहो तस-पज्जाय-गहणं अणंतभवेसु तहा।।20।।

अन्वयार्थ-**णिगोदादु**-निगोद से **णिस्सरित्तु**-निकलकर **ववहार-रासीए**-व्यवहार राशी में **उप्पज्जणं**-उत्पन्न होना **दुल्लहो**-दुर्लभ है **तहा**-तथा **अणंतभवेसु**-अनंतभवों में **तस-पज्जाय-गहणं**-त्रस पर्याय ग्रहण करना दुर्लभ है।

अइदुल्लह-णरजोणी, दुल्लह-सम्मत्त-णाण-चरित्ताणि।
णिच्छय-बोही हु महा-दुल्लहा तियाले लोयम्मि।।21।।

अन्वयार्थ-**तियाले**-तीनों कालों **लोयम्मि**-तीनों लोकों में **णरजोणी**-नरयोनि **अइदुल्लहा**-अतिदुर्लभ है **सम्मत्त-णाण-चरित्ताणि**-

सम्यक्त्व-ज्ञान-चारित्र **दुल्लहाणि**-दुर्लभ है (और) **हु**-निश्चय से **णिच्छय-बोही**-निश्चय बोधि **महा-दुल्लहा**-महा दुर्लभ है।

नर पर्याय भी निरर्थक

पाविय णर-पज्जायं, सुकुलं वुड्ढिं धम्मणिमित्तं जइ।
णो पययो मोक्खस्स हु, णिरत्थगा तस्स सव्वा ते।।22।।

अन्वयार्थ-णर-पज्जायं-नर पर्याय **सुकुलं**-सुकुल **वुड्ढिं**-समीचीन बुद्धि **धम्मणिमित्तं**-धर्म के निमित्त को प्राप्तकर **जइ**-यदि **मोक्खस्स**-मोक्ष के लिए **पययो**-प्रयत्नशील **णो**-नहीं है (तो) **तस्स**-उसके **हु**-निश्चय से **ते**-वे **सव्वा**-सब **णिरत्थगा**-निरर्थक हैं।

चार पुरुषार्थ

चदुविहो पुरिसत्थो हु, धम्मो अत्थो कामो तह मोक्खो।
ववसंति मोक्खाय जे, ते णियमा परम-पुरिसत्थी।।23।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय से **पुरिसत्थो**-पुरुषार्थ **चदुविहो**-चार प्रकार के हैं **धम्मो**-धर्म **अत्थो**-अर्थ **कामो**-काम **तह**-तथा **मोक्खो**-मोक्ष **जे**-जो (जीव) **मोक्खाय**-मोक्ष के लिए **ववसंति**-प्रयत्न करते हैं **ते**-वे **णियमा**-नियम से **परम-पुरिसत्थी**-परम पुरुषार्थी हैं।

मोक्ष

सव्वकम्म-विहीणो य, सहज-गुण-जुत्तो सुद्धभावेहिं।
णिक्कम्मो णिम्मलो हु, सस्सदो सुद्धप्पा मोक्खो।।24।।

अन्वयार्थ-सुद्धभावेहिं-शुद्धभाव **य**-और **सहज-गुण-जुत्तो**-सहज गुणों से युक्त **सव्वकम्म-विहीणो**-सर्वकर्म से विहीन **णिक्कम्मो**-निष्कर्म **णिम्मलो**-निर्मल **सस्सदो**-शाश्वत **सुद्धप्पा**-शुद्धात्मा **हु**-ही **मोक्खो**-मोक्ष है।

मोक्षमार्ग

सम्मत्तं सण्णाणं, सच्चरियं सिवपहो ववहारेण।
तत्तिय-मइयो अप्पा, णिच्छयेण होदि सिवपहिया।।25।।

अन्वयार्थ-ववहारेण-व्यवहार से **सम्मत्तं**-सम्यग्दर्शन **सण्णाणं**-सम्यग्ज्ञान **सच्चरियं**-सम्यक्चारित्र **सिवपहो**-शिवपथ है **णिच्छयेण**-निश्चय से **तत्तिय-मइयो**-इन तीनों से सहित **अप्पा**-आत्मा **सिवपहिया**-मोक्षमार्गी **होदि**-होती है।

द्विविध श्रेणी

बे सेणी मोक्खस्स हु, मण्णे खवगो य उवसमो णिच्चं।
उवसमस्स णो णियमो, खवगो णियमेण देदि सिवं।।26।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय से **मोक्खस्स**-मोक्ष की **बे सेणी**-दो श्रेणी सीढ़ी **मण्णे**-मानी गई हैं **खवगो**-क्षपक **य**-और **उवसमो**-उपशम **उवसमस्स**-उपशम श्रेणी का **णियमो**-नियम **णो**-नहीं है **खवगो**-क्षपक श्रेणी **णियमेण**-नियम से **सिवं**-मोक्ष को **देदि**-देती है।

सम्यक्त्व के हेतु

तच्चाणं सद्दहणं, सम्मत्तं अत्तागम-णिग्गंथा।
उवएसो अवि ताणं, जाणह हेदू सम्मत्तस्स।।27।।

अन्वयार्थ-तच्चाणं-तत्त्वों का **सद्दहणं**-श्रद्धान **सम्मत्तं**-सम्यक्त्व है **अत्तागम-णिग्गंथा**-आप्त, आगम, निर्ग्रंथ (और) **ताणं**-उनके **उवएसो**-उपदेश **अवि**-भी **सम्मत्तस्स**-सम्यक्त्व के **हेदू**-हेतु **जाणह**-जानो।

तत्त्व स्वरूप

जस्स-सहावो होज्जा, जो सो तच्चं हि तस्स णियमेणं।
तं तस्स एव तच्चं, तेण विणा ण किंचि वि तच्चं।।28।।

अन्वयार्थ-जस्स-जिसका **जो**-जो **सहावो**-स्वभाव **होज्जा**-होता है **सो**-वह **णियमेणं**-नियम से **तस्स**-उसका **तच्चं**-तत्त्व है **हु**-निश्चय से **तस्स**-उसका **तं**-वह **एव**-ही **तच्चं**-तत्त्व है **तेण**-उसके **विणा**-बिना **किंचि वि**-किंचित् भी **तच्चं**-तत्त्व **ण**-नहीं है।

द्रव्यों का तत्त्व

जीवत्तं च जीवस्स, सीयलत्तं जलस्स तच्चं जाण।
उण्हत्तं अग्गिणो हु, पूरणं गलणं पोग्गलस्स।।29।।
णहस्सवगाहणत्तं, गदि-हेदुत्तं तह धम्म-दव्वस्स।
वट्टणा काल-तच्चं, ठिदि-हेदुत्तमधम्मस्स सय।।30।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय से **जलस्स**-जल का **तच्चं**-तत्त्व **सीयलत्तं**-शीतलता **अग्गिणो**-अग्नि का **उण्हत्तं**-उष्णत्व **जीवस्स**-जीव का **जीवत्तं**-जीवत्व **पोग्गलस्स**-पुद्गल का (स्वभाव) **पूरणं**-पूरन **च**-और **गलणं**-गलन **धम्म-दव्वस्स**-धर्मद्रव्य का **गदि-हेदुत्तं**-गति हेतुत्व **अधम्मस्स**-अधर्म द्रव्य का **ठिदि-हेदुत्तं**-स्थिति हेतुत्व **णहस्स**-आकाश का **अवगाहणत्तं**-अवगाहनत्व **तह**-तथा **वट्टणा**-वर्तना **सय**-सदा **काल-तच्चं**-काल द्रव्य का तत्त्व **जाण**-जानो।

सम्यग्ज्ञान-स्वरूप

सम्मत्तविणाभावी, जं णाणं जीवे सण्णाणं तं।
भणदि जहत्थ-सरूवं, णूणमहियं विणा अत्थस्स।।31।।

अन्वयार्थ-जीवे-जीव में **सम्मत्तविणाभावी**-सम्यक्त्व का अविनाभावी **जं**-जो **णाणं**-ज्ञान है **तं**-वह **सण्णाणं**-सम्यग्ज्ञान है

(वह) **णूणं**-न्यून **अहियं**-अधिक **विणा**-बिना **अत्थस्स**-पदार्थ का **जहत्थ-सरूवं**-यथार्थ स्वरूप **भणादि**-कहता है।

सम्यक्चारित्र-स्वरूप

अप्परूव-लद्धीए, सुहे पविट्ठी णिवट्ठी असुहादु।
सच्चरियं णादव्वं, कारणं णिच्छय-चरित्तस्स।।32।।

अन्वयार्थ-अप्परूव-लद्धीए-आत्मस्वरूप की प्राप्ति के लिए **सुहे**-शुभ में **पविट्ठी**-प्रवृत्ति **असुहादु**-अशुभ से **णिवट्ठी**-निवृत्ति **सच्चरियं**-सम्यक्चारित्र **णादव्वं**-जानना चाहिए (जो) **णिच्छय-चारित्तस्स**-निश्चय चारित्र का **कारणं**-कारण है।

अभेद रत्नत्रय धारक

णिच्छय-रयणत्तयं च, होज्जा अभेदरूवं णियमेणं।
णेव गिहत्थो कया वि, तं लहिदुं समत्थो साहू।।33।।

अन्वयार्थ-णिच्छय-रयणत्तयं-निश्चय रत्नत्रय **णियमेणं**-नियम से **अभेदरूवं**-अभेदरूप **होज्जा**-होता है **च**-और **तं**-उसे **लहिदुं**-प्राप्त करने में **साहू**-साधु (ही) **समत्थो**-समर्थ है **गिहत्थो**-गृहस्थ **कया वि**-कदापि भी (समर्थ) **णेव**-नहीं है।

योगी कौन ?

भव-तण-भोय-विरत्तो, सहाव-लीणो रयणत्तय-जुत्तो।
जोगी णिरारंभो य, जो कम्मिंधण-दाहगो सो।।34।।

अन्वयार्थ-कम्मिंधण-दाहगो-कर्म ईंधन का दाहक **जो**-जो **भव-तण-भोय-विरत्तो**-संसार-शरीर-भोगों से विरक्त **सहाव-लीणो**-स्वभाव में लीन **रयणत्तय-जुत्तो**-रत्नत्रय से युक्त **य**-और **णिरारंभो**-निरारंभ है **सो**-वह **जोगी**-योगी है।

आत्मरसास्वादी

विसयकसायविहीणो, सव्व-पावादु विवज्जिदो जो सो।
झाण-णाण-तव-जुत्तो, अप्प-रस-चक्खेदुं सक्को।।35।।

अन्वयार्थ-जो-जो **विसयकसायविहीणो**-विषय कषाय से विहीन **सव्व-पावादु**-सभी पापों से **विवज्जिदो**-विवर्जित **झाण-णाण-तव-जुत्तो**-ध्यान, ज्ञान और तप से युक्त है **सो**-वह **अप्प-रस-चक्खेदुं**-आत्मरस चखने में **सक्को**-समर्थ है।

ज्ञानलीन मंगल

ठिदि-पण्णा जे साहू, णाणम्मि करंति चित्तमेगग्गं।
लोयम्मि मंगल्ला हु, जग-पुज्जा मुणी ते णेया।।36।।

अन्वयार्थ-ठिदि-पण्णा-स्थिति प्रज्ञ **जे**-जो **साहू**-साधु **णाणम्मि**-ज्ञान में **चित्तमेगग्गं**-चित्त को एकाग्र **करंति**-करते हैं **हु**-निश्चय से **ते**-उन्हें **लोयम्मि**-लोक में **मंगल्ला**-मंगल **जग-पुज्जा**-जगत् पूज्य **मुणी**-मुनि **णेया**-जानना चाहिए।

लोकपूज्य योगी

भव-दुक्खादो भीदो, भव-हेदु-पाव-विणासगो जोगी।
सव्वामंगल-हंतू, होज्जा कहं जग-पुज्जो णो।।37।।

अन्वयार्थ-भव-दुक्खादो-भव दुःख से **भीदो**-भीत **भव-हेदु-पाव-विणासगो**-संसार के हेतुभूत पाप के विनाशक **सव्वामंगल-हंतू**-अमंगल को हरने वाले **जोगी**-योगी **कहं**-कैसे **जग-पुज्जो**-जगत् पूज्य **णो**-नहीं **होज्जा**-होते?

अरिहंतावस्था का मूल

वसदि सयं एगंते, जस्स चित्तं अणेगंत-संजुदो।
जो अरिहवत्थाइ सो, मूलो सिवाकंखी जोगी।।38।।

अन्वयार्थ-जो-जो **सयं**-स्वयं **एगंते**-एकांत में **वसदि**-वास करते हैं (लेकिन) **जस्स**-जिसका **चित्तं**-चित्त **अणेगंत-संजुदो**-अनेकांत से युक्त है (जो) **सिवाकंखी**-मोक्ष का आकांक्षी और **अरिहवत्थाइ**-अरिहंत अवस्था का **मूलो**-मूल है **सो**-वह **जोगी**-योगी है।

भव्य कहाँ रागी ?

भोगाणं चागी जो, तिजोग-रोहगो गुणणुरागी सो।
अप्प-सहावे लीणो, जोगी भव्वो रागी जम्मि।।39।।

अन्वयार्थ-जो-जो **भोगाणं**-भोगों का **चागी**-त्यागी **तिजोग-रोहगो**-तीनों योगों का रोधक **गुणणुरागी**-गुणानुरागी **अप्प-सहावे**-आत्म स्वभाव में **लीणो**-लीन है (और) **जम्मि**-जिसमें **भव्वो**-भव्य **रागी**-रागी है **सो**-वह **जोगी**-योगी है।

संयमी ही योगी

कुणदि संजम-साहणं, सया जीव-विराहणा-हीणो जो।
सिद्धाराहणाइ सो, लीणो भाव-विसुद्ध-जोगी।।40।।

अन्वयार्थ-जो **संजम-साहणं**-संयम-साधना **कुणदि**-करता है **सया**-सदा **जीव-विराहणा-हीणो**-जीवों की विराधना से हीन **सिद्धाराहणाइ**-सिद्धों की आराधना में **लीणो**-लीन (और) **भाव-विसुद्धो**-भावों से विशुद्ध है **सो**-वह **जोगी**-योगी है।

आत्माराधक

सव्व-वासणा-हीणो, अप्पुवासणा-लीणो अइसेसी।
एगसणिय-अणवज्जो, जो भदंतो खलु जोगी सो।।41।।

अन्वयार्थ-खलु-निश्चय से **जो**-जो **सव्व-वासणा-हीणो**-सर्व वासना से हीन **अप्पुवासणा-लीणो**-आत्म उपासना में लीन **अइसेसी**-ज्ञान आदि के अतिशय से सम्पन्न **एगसणियो**-एकाशन करने वाला **अणवज्जो**-पाप से रहित **भदंतो**-कल्याणकारक है **सो**-वह **जोगी**-योगी है।

कर्मदाहक

हिदंकरो सव्वाणं, णाणग्गिणा कम्म-तुस-दाहगो य।
अप्परदो जोगी जो, सो सव्व-सुहंकरो णियमा।।42।।

अन्वयार्थ-जो-जो **सव्वाणं**-सभी का **हिदंकरो**-हित करने वाला है **णाणग्गिणा**-ज्ञानाग्नि के द्वारा **कम्म-तुस-दाहगो**-कर्म रूपी भूसे को जलाने वाला **अप्परदो**-आत्मरत **य**-और **णियमा**-नियम से **सव्व-सुहंकरो**-सभी के लिए शुभकर है **सो**-वह **जोगी**-योगी है।

अध्यात्म-संवृत

वच्छल्ल-हिमसेलो य, सव्व-गुणालयो चेयणाए जो।
सहाव-धम्म-पालगो, अज्झप्प-संवुड-जोगी सो।।43।।

अन्वयार्थ-जो-जो **वच्छल्ल-हिमसेलो**-वात्सल्य के हिमालय **चेयणाए**-चेतना के **सव्व-गुणालयो**-सर्व गुणों के आलय **सहाव-धम्म-पालगो**-स्वभाव धर्म पालक **य**-और **अज्झप्प-संवुडो**-(अध्यात्म-संवृत) मनोनिग्रही है **सो**-वह **जोगी**-योगी है।

पंद्रहविध योग

चदु-चदु-सत्त-भेयादु, पणदसविहो मण-वय-काय-जोगो।
कमसो हि मुणेदव्वो, मुणीहि पडिपाडिदो इत्थं।।44।।

अन्वयार्थ-चदु-चदु-सत्त-भेयादु-चार-चार-सात के भेद से **कमसो**-क्रमश: **मण-वय-काय-जोगो**-मन-वचन-काय योग **हि**-निश्चय से **पणदसविहो**-पंद्रह प्रकार का **मुणेदव्वो**-जानना चाहिए **इत्थं**-इस प्रकार **मुणीहि**-मुनियों के द्वारा **पडिपाडिदो**-प्रतिपादित किया गया है।

मन व वचन योग

सच्चासच्चुहयणुहय-भेयादो चदुविहो मणजोगो य।
वयण-जोगो वि चदुहा, एवमेव जहाणुरूवं च।।45।।

अन्वयार्थ-सच्चासच्चुहयणुहय-भेयादो-सत्य, असत्य, उभय और अनुभय के भेद से **मणजोगो**-मनयोग **चदुविहो**-चार प्रकार का है **च**-और **वयण-जोगो**-वचन योग **वि**-भी **एवमेव**-इसी प्रकार **जहाणुरूवं**-यथानुरूप **चदुहा**-चार प्रकार का है।

सप्तविध काय योग

कायजोगारालियो, वेगुव्वियो आहारगो ताणं।
मिस्स-कम्माण-जोगो, सत्तविहो सव्वदा इत्थं।।46।।

अन्वयार्थ-कायजोगो-काय योग **ओरालियो**-औदारिक **वेगुव्वियो**-वैक्रियक **आहारगो**-आहारक **ताणं**-उनके **मिस्सकम्माण-जोगो**-मिश्र (अर्थात् औदारिक मिश्र, वैक्रियक मिश्र, आहारक मिश्र) और कार्माणकाय योग **इत्थं**-इस प्रकार **सव्वदा**-सर्वदा **सत्तविहो**-सात प्रकार का है।

अष्टांग योग

सिद्धंताणुसारेण, पणदसजोगो होज्जा जीवाणं।
परं अट्ठंग-जोगं, जाणह साहणा-पसंगादु।।47।।

अन्वयार्थ-इस प्रकार **सिद्धंताणुसारेण**-सिद्धांत के अनुसार **जीवाणं**-जीवों के **पणदस-जोगो**-पंद्रह योग **होज्जा**-होते हैं **परं**-किंतु (यहाँ) **साहणा-पसंगादु**-साधना का प्रसंग होने से **अट्ठंग-जोगं**-अष्टांग योग **जाणह**-जानो।

पसंगाणुसारेणं, भणिदो वसुविह-जोगो इह गंथे।
वसु-कम्म-णासगो तं, पढणीयो अट्ठंगजोगो।।48।।

अन्वयार्थ-**इह**-इस **गंथे**-ग्रंथ में **पसंगाणुसारेणं**-प्रसंग के अनुसार **वसुविह-जोगो**-आठ प्रकार का योग **भणिदो**-कहा गया है **तं**-इसीलिए **वसु-कम्म-णासगो**-वसुकर्म नाशक **अट्ठंगजोगो**-अष्टांग योग (नामक यह ग्रंथ) **पढणीयो**-पठनीय है।

णेया अट्ठ-संखा हु, बहुवजोगी वसुगुणा सिद्धाणं।
अट्ठ-सम्मत्तंगाणि, णाणस्स जह होज्ज अट्ठाणि।।49।।

अन्वयार्थ-**हु**-निश्चय से **अट्ठ-संखा**-आठ संख्या को **बहुवजोगी**-बहु उपयोगी **णेया**-जानना चाहिए **जहा**-जैसे **सिद्धाणं**-सिद्धों के **वसुगुणा**-आठ गुण **अट्ठ-सम्मत्तंगाणि**-सम्यक्त्व के आठ अंग **णाणस्स**-ज्ञान के **अट्ठाणि**-आठ अंग **होज्ज**-होते हैं।

होज्जा हु अट्ठ-भूमी, तित्थयरस्स धम्मसहाए सया।
तह अट्ठम-भूमीए, बारस-सहाओ जीवाणं।।50।।

वसु-मंगल-दव्वाइं, पूयण-दव्वाणि अट्ठ-पडिहारी।
अट्ठा अप्पपदेसा, णियमेण होंति तहा अचला।।51।।

अन्वयार्थ-**हु**-निश्चय से **तित्थयरस्स**-तीर्थंकर की **धम्म-सहाए**-

धर्म सभा में **सया**-सदा **अट्ठ-भूमी**-आठ भूमियाँ **होज्जा**-होती हैं **तह**-तथा **अट्ठम-भूमीए**-अष्टम भूमि में **जीवाणं**-जीवों की **बारस-सहाओ**-बारह सभाएँ होती हैं **णियमेण**-नियम से **वसु-मंगल-दव्वाइं**-अष्ट मंगल द्रव्य **पूयण-दव्वाणि**-अष्ट पूजन द्रव्य **अट्ठ-पडिहारी**-अष्ट प्रातिहार्य **तहा**-तथा **अट्ठा**-आठ (ही) **अचला**-अचल **अप्प-पदेसा**-आत्म प्रदेश **होंति**-होते हैं।

जम-णियमासण-पाणायामा पच्चाहारो धारणा हु।
झाणं तहा समाही, जोगस्स सया अट्ठंगाणि।।52।।

अन्वयार्थ-**हु**-निश्चय से **जमो**-यम **णियमो**-नियम **आसणं**-आसन **पाणायामो**-प्राणायाम **पच्चाहारो**-प्रत्याहार **धारणा**-धारणा **झाणं**-ध्यान **तहा**-तथा **समाही**-समाधि **जोगस्स**-योग के (ये) **सया**-सदा **अट्ठंगाणि**-आठ अंग होते हैं।

यम

यम का व्युत्पत्त्यर्थ

जम्म-विच्छेदगो य, जगारो मिच्चु-णासगो मगारो।
जमं संजम-पदीगं, धरंति भावि-सिद्धा जे ते।।53।।

अन्वयार्थ-**जगारो**-जकार **जम्म-विच्छेदगो**-जन्म का विच्छेद करने वाला है **य**-और **मगारो**-मकार **मिच्चु-णासगो**-मृत्यु नाशक है **जे**-जो **संजम-पदीगं**-संयम के प्रतीक **जमं**-यम को **धरंति**-धारण करते हैं **ते**-वे **भावि-सिद्धा**-भावी सिद्ध होते हैं।

यम-स्वरूप

सुह-संकप्प-पालणं, सव्व-सावज्ज-जोगं उज्झित्ता।
जमो मुणेदव्वो खलु, जावज्जीवं भव्वजणेहि।।54।।

अन्वयार्थ-**भव्वजणेहि**-भव्यजनों के द्वारा **जावज्जीवं**-यावज्जीवन

सव्व-सावज्ज-जोगं-सर्व सावद्य योग का **उज्झित्ता**-त्याग करके **सुह-संकप्प-पालणं**-शुभ संकल्प का पालन करना **खलु**-निश्चय से **जमो**-यम **मुणेदव्वो**-जानना चाहिए।

यम का माहात्म्य

मण्णे लोगम्मि जमो, तस्स जमस्स अवि संहारगो जो।
सो जमो संजमो वा, कम्म-विघादगो णियमेणं।।55।।

अन्वयार्थ-**लोगम्मि**-लोक में **जो**-जो **जमो**-यम (यमराज) **मण्णे**-माना जाता है **तस्स**-उस **जमस्स**-यमराज का **अवि**-भी **संहारगो**-संहारक **सो**-वह **जमो**-यम **वा**-अथवा **संजमो**-संयम है (वह) **णियमेणं**-नियम से **कम्म-विघादगो**-कर्म का विघातक है।

धारंति पुण्णवंता, जमं संसार-सुहाणि भुंजित्ता।
सासय-णिव्वाण-सुहं, पावंति सिवणायगा होज्ज।।56।।

अन्वयार्थ-जो **पुण्णवंता**-पुण्यवान् **जमं**-यम **धारंति**-धारण करते हैं वे **संसार-सुहाणि**-संसार सुखों को **भुंजित्ता**-भोगकर **सासय-णिव्वाण-सुहं**-शाश्वत निर्वाण सुख **पावंति**-प्राप्त करते हैं व **सिवणायगा**-शिवनायक **होज्ज**-होते हैं।

यम फल ग्राहक

अप्पवदं पालित्ता, पाविदं मादंगेण सारज्जं।
पुण मोक्खं पाविहिदे, जमपालो जमपालणेणं।।57।।

अन्वयार्थ-**अप्पवदं**-अल्प व्रत का **पालित्ता**-पालन कर **मादंगेण**-चांडाल के द्वारा भी **सारज्जं**-स्वर्ग का राज्य **पाविदं**-प्राप्त किया गया **पुण**-पुनः **जमपालणेणं**-यम के पालन से **जमपालो**-यमपाल **मोक्खं**-मोक्ष **पाविहिदे**-प्राप्त करेगा।

काग-मंस-चागेणं, लहिदो मोक्खो भिल्ल-पुरुरवेणं।
भिल्ल-खदिरसारेण य, सग्गो पाविस्सदि सिवं पुण।।58।।

अन्वयार्थ-काग-मंस-चागेणं-कौए के माँस के त्याग से **भिल्ल पुरुरवेणं**-पुरुरवा भील के द्वारा कालांतर में **मोक्खो**-मोक्ष **लहिदो**-प्राप्त किया गया **य**-और **भिल्ल-खदिरसारेण**-खदिरसार भील ने **सग्गो**-स्वर्ग प्राप्त किया (वह) **पुण**-पुनः **सिवं**-मोक्ष **पाविस्सदि**-प्राप्त करेगा।

पालिय पंचणुव्वदं, णायसिरीए हु पाविदो सग्गो।
पुण सुगुमालं होच्चा, सुहा सव्वत्थ-सिद्धी गदा।।59।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय से **पंचणुव्वदं**-पाँच अणुव्रतों का **पालिय**-पालन कर **णायसिरीए**-नागश्री ने **सग्गो**-स्वर्ग **पाविदो**-प्राप्त किया। **पुण**-पुनः **सुगुमालं**-सुकुमाल **होच्चा**-होकर **सुहा**-शुभ **सव्वत्थ-सिद्धी**-सर्वार्थसिद्धि **गदा**-गए।

उज्झिय रत्ति-भोयणं, जागरिगा जमरूवेण होहीअ।
णायसिरी पुण देवो, लहिस्सदि णिव्वाणं सुइरं।।60।।

अन्वयार्थ-जमरूवेण-यम रूप से **रत्ति-भोयणं**-रात्रि भोजन का **उज्झिय**-त्यागकर **जागरिगा**-जागरिका **णायसिरी**-नागश्री **पुण**-पुनः **देवो**-देव **होहीअ**-हुई (व) **सुइरं**-शीघ्र **णिव्वाणं**-निर्वाण **लहिस्सदि**-प्राप्त करेगी।

धण्णंकर-पुण्णंकर भादू पालित्तु जिणच्चण-धम्मं।
होहीअ राय-पुत्ता, अमर-वइर-सेणा सुरा पुण।।61।।

अन्वयार्थ-धण्णंकर-पुण्णंकर-भादू-धण्णंकर व पुण्णंकर भाई **जिणच्चण-धम्मं**-जिन अर्चना रूप धर्म का **पालित्तु**-पालन कर

अमर-वइर-सेणा-अमरसेन-वइरसेन-नामक **राय-पुत्ता**-राज पुत्र **होहीअ**-हुए **पुण**-पुनः **सुरा**-देव हुए।

जमरूवेण रत्तीइ, चदुविहाहारं उज्झिय सिआलो।
होज्ज पीदिंगरो पुण, पाविदं णिव्वाणं तेणं।।62।।

अन्वयार्थ-जमरूवेण-यम रूप से **रत्तीइ**-रात्रि में **चदुविहाहारं**-चारों प्रकार के आहार का **उज्झिय**-त्यागकर **सिआलो**-सियार **पीदिंगरो**-प्रीतिंकर **होज्ज**-हुआ **पुण**-पुनः **तेणं**-उसके द्वारा **णिव्वाणं**-निर्वाण **पाविदं**-प्राप्त किया गया।

नियम

नियम-स्वरूप

सुह-संकप्प-गहणं हु, संकप्पेणं वा अप्पयालस्स।
पाव-उज्झणं मण्णे, उहय-सुक्ख-कारणं णियमो।।63।।

अन्वयार्थ-अप्पयालस्स-अल्प काल के लिए **संकप्पेणं**-संकल्प पूर्वक **पाव-उज्झणं**-पाप का त्याग करना **वा**-अथवा **सुह-संकप्प-गहणं**-शुभ संकल्प का ग्रहण करना **हु**-निश्चय से **उहय-सुक्ख-कारणं**-उभय सुख का कारण **णियमो**-नियम **मण्णे**-माना गया है।

नियम-माहात्म्य

सग्गस्स सारभूदो, मण्णे णियमो सय सुह-सोवाणं।
णियममेगं वि पालदि, जो सो लहदि मोक्खं कमसो।।64।।

अन्वयार्थ-णियमो-नियम **सय**-सदा **सग्गस्स**-स्वर्ग के लिए **सारभूदो**-सारभूत (व) **सुह-सोवाणं**-सुख का सोपान **मण्णे**-माना जाता है **जो**-जो **एगं**-एक **वि**-भी **णियमं**-नियम का **पालदि**-पालन करता है **सो**-वह **कमसो**-क्रमशः **मोक्खं**-मोक्ष **लहदि**-प्राप्त करता है।

सकल संयम का हेतु

मण्णे णियमो णियमा, जमस्स सयल-संजम-कारणं वा।
सो ववहार-मग्गो य, णिच्छय-कारणं ववहारो।।65।।

अन्वयार्थ-णियमो-नियम **णियमा**-नियम से **जमस्स**-यम **वा**-अथवा **सयल-संजम-कारणं**-सकल संयम का कारण **मण्णे**-माना गया है। **सो**-वह **ववहार-मग्गो**-व्यवहार मार्ग है **य**-और **ववहारो**-व्यवहार **णिच्छय-कारणं**-निश्चय का कारण है।

व्यवहार भी आवश्यक

ववहार-मुविक्खित्ता, णिच्छयं कंखेदि जो सो मूढो।
सेणिं विणा छायणं, जह तह मग्गं विणा लक्खं।।66।।

अन्वयार्थ-जो-जो **ववहार-मुविक्खित्ता**-व्यवहार की उपेक्षा करके **णिच्छयं**-निश्चय की **कंखेदि**-आकांक्षा करता है **सो**-वह **तह**-उसी प्रकार **मूढो**-मूढ़ है **जह**-जैसे (कोई) **सेणिं**-श्रेणी (सीढ़ी) के **विणा**-बिना **छायणं**-छत्त की (व) **मग्गं**-मार्ग के **विणा**-बिना **लक्खं**-लक्ष्य की आकांक्षा करता है।

निश्चय भी आवश्यक

पच्चक्खेण अप्पणिहि-हेदू होदि णिच्छय-मोक्खमग्गो।
सम्म-ववहारो सिवो, णो सक्को विणा णिच्छयेण।।67।।

अन्वयार्थ-पच्चक्खेण-प्रत्यक्ष रूप से **णिच्छय-मोक्खमग्गो**-निश्चय मोक्षमार्ग **अप्पणिहि-हेदू**-आत्म निधि का हेतु **होदि**-होता है। **णिच्छयेण विणा**-निश्चय के बिना **सम्म-ववहारो**-सम्यक् व्यवहार व **सिवो**-मोक्ष **सक्को**-शक्य **णो**-नहीं है।

व्यवहार-निश्चय

तणुव्व ववहार-णयो, पाणोव्व सय णिच्छय-णयो मण्णे।
पाणं विणा तणू जह, णिच्छयेण विणा ववहारो।।68।।

अन्वयार्थ-ववहार-णयो-व्यवहार नय **तणुव्व**-शरीर के समान (और) **णिच्छय-णयो**-निश्चय नय **सय**-सदा **पाणोव्व**-प्राण के समान **मण्णे**-माना जाता है **जह**-जिस प्रकार **पाणं**-प्राण के **विणा**-बिना **तणू**-शरीर है (उसी प्रकार) **णिच्छयेण**-निश्चय के **विणा**-बिना **ववहारो**-व्यवहार है।

बीयं व ववहारो य, रुक्खोव्व हु णिच्छय-णयो मण्णे।
बीयं विणा ण रुक्खो, तह ण समाही विणा बोहिं।।69।।

अन्वयार्थ-ववहारो-व्यवहार नय **बीयं व**-बीज के समान **य**-और **णिच्छय-णयो**-निश्चय नय **रुक्खोव्व**-वृक्ष के समान **मण्णे**-माना जाता है (जिस प्रकार) **बीयं**-बीज के **विणा**-बिना **रुक्खो**-वृक्ष **ण**-नहीं होता **तह**-उसी प्रकार **हु**-निश्चय से **बोहिं**-बोधि (रत्नत्रय) के **विणा**-बिना **समाही**-समाधि **ण**-नहीं होती।

देहं विणा ण सक्को, को वि अप्पा लहिदुं मोक्खमग्गं।
पाणं विणा जहा खलु , सरीरं जीविदुं णो कया वि।।70।।

अन्वयार्थ-खलु-निश्चय से **देहं**-देह के **विणा**-बिना **को वि**-कोई भी **अप्पा**-आत्मा **कया वि**-कदापि **मोक्खमग्गं**-मोक्ष मार्ग **लहिदुं**-प्राप्त करने में (उसी प्रकार) **सक्को**-शक्य **ण**-नहीं है। **जहा**-जिस प्रकार **पाणं विणा**-प्राणों के बिना **सरीरं**-शरीर **जीविदुं**-जीने में (समर्थ) **णो**-नहीं है।

अणंत-पज्जायेसु वि, लहिदुं सिवं जीवो विणा देहं।
असक्को विणा माणुस-देहं को वि अप्पा तहेव।।71।।

अन्वयार्थ-को वि-कोई भी **जीवो**-जीव **देहं**-देह के **विणा**-बिना

अणंत-पज्जायेसु-अनंत पर्यायों में **वि**-भी **सिवं**-मोक्ष **लहिदुं**-प्राप्त करने में **असक्को**-अशक्य है। **तहेव**-उसी प्रकार **माणुस-देहं**-मनुष्य देह के **विणा**-बिना **अप्पा**-आत्मा (मोक्ष प्राप्त करने में अशक्य है)।

नियम आवश्यक

णियमो ववहार-पहो, जदि सम्मं ता सिव-हेदू णियमा।
णियमं विणा पाविदो, केण सिवो सिवपहो धम्मो।।72।।

अन्वयार्थ-णियमो-नियम **ववहार-पहो**-व्यवहार पथ है। **जदि**-यदि (वह) **सम्मं**-सम्यक् है **ता**-तो **णियमा**-नियम से **सिव-हेदू**-मोक्ष का हेतु है। **णियमं विणा**-नियम के बिना **केण**-किसके द्वारा **धम्मो**-धर्म **सिवपहो**-मोक्ष पथ (व) **सिवो**-मोक्ष **पाविदो**-प्राप्त किया गया?

मोक्ष सुख हेतु

भव्वा जे पालंते, सम्मं णियमं पावित्ता सय ते।
संसार-सार-सोक्खं, लहंते मोक्ख-सुहं कमसो।।73।।

अन्वयार्थ-जे-जो **भव्वा**-भव्य जीव **सय**-सदा **सम्मं**-सम्यक् **णियमं**-नियम का **पालंते**-पालन करते हैं **ते**-वे **संसार-सार-सोक्खं**-संसार के सारभूत सुख **पावित्ता**-प्राप्त कर **कमसो**-क्रमशः **मोक्ख-सुहं**-मोक्ष सुख **लहंते**-प्राप्त करते हैं।

नियम फल ग्राहक

वसुदत्त-तुंगभद्दा-दुग्गंधाणंतमदि-णीलीहिं च।
विज्जुदुमय-रोहिणीहि, पाविदं सप्फलं णियमस्स।।74।।

अन्वयार्थ-वसुदत्त-तुंगभद्दा-दुग्गंधाणंतमदि-णीलीहिं-वसुदत्त, तुंगभद्रा, दुर्गंधा, अनंतमति, नीली **विज्जुदुमय-रोहिणीहि च**-विद्युत्चोर, उमय और रोहिणी के द्वारा **णियमस्स**-नियम का **सप्फलं**-सत्फल **पाविदं**-प्राप्त किया गया।

नियम, यम का हेतु

णियमेण होदि णियमो, भव-खंडणस्स दुह-भंजण-हेदू।
सया जमस्स कारणं, सुह-संकप्प-जुत्तो णियमो।।75।।

अन्वयार्थ-णियमेण-नियम से **णियमो**-नियम **भव-खंडणस्स**-भव-खंडन व **दुह-भंजण-हेदू**-दु:ख भंजन का हेतु **होदि**-होता है। **सुह-संकप्प-जुत्तो**-शुभ संकल्प से युक्त **णियमो**-नियम **सया**-सदा **जमस्स**-यम का **कारणं**-कारण है।

आसन

आसन धारक कौन ?

भवाहिलासो ण जाण, कंखंते णो भववासं जे ते।
संत-विमल-चित्त-जुदा, समत्था आसणं धरेदुं।।76।।

अन्वयार्थ-जाण-जिनके **भवाहिलासो**-भवाभिलाषा **ण**-नहीं है **जे**-जो **भववासं**-भव वास की **णो कंखंते**-आकांक्षा नहीं करते **संत-विमल-चित्त-जुदा**-शांत व विमल चित्त से युक्त **ते**-वे **आसणं**-आसन **धरेदुं**-धारण करने में **समत्था**-समर्थ हैं।

कुणंति धम्मज्झाणं, जोगी णिच्चं विभिण्णासणेसुं।
धम्मझाणस्स कस्स वि, णियमो णो एग-आसणस्स।।77।।

अन्वयार्थ-जोगी-योगी **णिच्चं**-नित्य **विभिण्णासणेसुं**-विभिन्न आसनों में **धम्मज्झाणं**-धर्मध्यान **कुणंति**-करते हैं **धम्मझाणस्स**-धर्मध्यान के लिए **कस्स वि**-किसी भी **एग-आसणस्स**-एक आसन का **णियमो**-नियम **णो**-नहीं है।

स्थिर आसन से निर्वाण

उत्तम-संहणण-जुदा, बली थिमिआकंपिया ठिरासणा।
सव्वावत्थं झायिय, पावंति सस्सद-णिव्वाणं।।78।।

अन्वयार्थ-उत्तम-संहणण-जुदा-उत्तम संहनन से युक्त **बली**-बलवान् **थिमिआकंपिया**-निश्चल, अकंप **ठिरासणा**-स्थिर आसन वाले **सव्वावत्थं**-सर्वावस्थाओं में **झायिय**-ध्यान कर **सस्सद-णिव्वाणं**-शाश्वत निर्वाण को **पावंति**-प्राप्त करते हैं।

प्रशस्तासन

इह काले सत्तीए, झाणस्स कइवय-सूरी भासंति।
बे-आसणं पसत्थं, काउसग्गो पउमासणं च।।79।।

अन्वयार्थ-कइवय-सूरी-कई आचार्य **इह काले**-इस काल में **सत्तीए**-शक्त्यानुसार **झाणस्स**-ध्यान के लिए **बे-आसणं पसत्थं**-दो प्रशस्त आसन **भासंति**-कहते हैं **काउसग्गो**-कायोत्सर्ग **च**-और **पउमासणं**-पद्मासन।

ध्यान हेतु आसन

पउमासण-वीरासण-वज्जं अद्धपज्जंग-पज्जंगं।
सुहासणादि-मासणं, झाणस्स गहणिदव्वं तहा।।80।।

अन्वयार्थ-पउमासण-वीरासण-वज्जं-पद्मासन, वीरासन, वज्रासन **अद्धपज्जंग-पज्जंगं**-अर्द्धपर्यंक, पर्यंक **तहा**-और **सुहासणादिं**-सुखासन आदि **आसणं**-आसन **झाणस्स**-ध्यान के लिए **गहणिदव्वं**-ग्रहण करने योग्य हैं।

आसन से मनस्थिरता

जेण आसणेणं खलु, सक्को जोगी थिरीकणस्स मणं।
तेण आसणेण सया, झाएज्जा सुद्धभावेहिं।।81।।

अन्वयार्थ-खलु-निश्चय से **जेण**-जिस **आसणेणं**-आसन के द्वारा

जोगी-योगी **मणं**-मन को **थिरीकणस्स**-स्थिर करने के लिए **सक्को**-शक्य है **तेण**-उस **आसणेण**-आसन के द्वारा **सया**-सदा **सुद्धभावेहिं**-शुद्ध भावों से **झाएज्जा**-ध्यान करना चाहिए।

आसनाभ्यास आवश्यक

आसणब्भासं विणा, विज्जदे ण सरीर-थिरिमा कया वि।
ताए समाहि-याले, खिज्जेदि तहा णिच्छयेणं।।82।।

अन्वयार्थ-आसणब्भासं-आसन के अभ्यास के **विणा**-बिना **सरीर-थिरिमा**-शरीर की स्थिरता **कया वि**-कदापि **ण**-नहीं **विज्जदे**-होती। **तहा**-तथा **णिच्छयेणं**-निश्चय से **ताए**-उससे (शरीर की अस्थिरता से) **समाहि-याले**-समाधि काल में **खिज्जेदि**-खिन्नता होती है।

आसन से लाभ

विरत्ति-विड्ढि-कारणं, मण-पणिहि-अक्ख-णिग्गहाण-हेदू।
संवेग-भाव-वड्ढग-मारोग्ग-हेदू आसणं च।।83।।

अन्वयार्थ-आसणं-आसन **विरत्ति-विड्ढि-कारणं**-विरक्ति की वृद्धि का कारण **मण-पणिहि-अक्ख-णिग्गहाण-हेदू**-चित्त की एकाग्रता, इंद्रिय निग्रह का हेतु **संवेग-भाव-वड्ढगं**-संवेग भाव का वर्द्धक **च**-और **आरोग्ग-हेदू**-आरोग्य का हेतु है।

णाणा-रोय-णासगं, बलवड्ढगं कंति-संति-हेदू य।
कसायसमण-कारणं, विसुद्धीइ आसणं णिच्चं।।84।।

अन्वयार्थ-आसणं-आसन **णिच्चं**-नित्य ही **णाणा-रोय-णासगं**-नाना रोगों का नाशक **बलवड्ढगं**-बल-वर्द्धक **कंति-संति-हेदू**-कांति, शांति का हेतु **कसायसमण-कारणं**-कषायों के शमन का कारण **य**-और **विसुद्धीइ**-विशुद्धि का (हेतु है)।

सारीरिय-सामाइय-माणसिग-अज्झप्पारोग्गं सया।
लहदि सस्सदारोग्गं, अब्भुज्जदो आसणस्स खलु।।85।।

अन्वयार्थ-खलु-निश्चय से **आसणस्स**-आसन के लिए **अब्भुज्जदो**-उद्यत **सया**-सदा **सारीरिय-सामाइय-माणसिग-अज्झप्पारोग्गं**-शारीरिक, सामाजिक, मानसिक, आध्यात्मिक आरोग्य व **सस्सदारोग्गं**-शाश्वत आरोग्य को **लहदि**-प्राप्त करता है।

स्वपरहितार्थ समर्थ कौन ?

णिब्भयो णिव्विसंको, णिम्मोही णिक्कंखो चिक्खअणो।
णिव्विदुगुंछो धीरो, सया समत्थो सवर-हिदाय।।86।।

अन्वयार्थ-णिब्भयो-निर्भीक **णिव्विसंको**-नि:शंक **णिम्मोही**-निर्मोही **णिक्कंखो**-निष्कांक्ष **चिक्खअणो**-सहिष्णु **णिव्विदुगुंछो**-निर्विचिकित्सा **धीरो**-धीर **सया**-सदा **सवर-हिदाय**-स्वपर हित के लिए **समत्थो**-समर्थ है।

प्राणायाम

प्राणायाम की आवश्यकता

पाणायामावसियो, झाण-सिद्धीइ य चित्त-थिरिमाए।
मुणिजणेहि जोगीहिं, सव्वदा पसंसणीयो सो।।87।।

अन्वयार्थ-झाणसिद्धीइ-ध्यान की सिद्धि **य**-और **चित्त-थिरिमाए**-चित्त की स्थिरता के लिए **पाणायामावसियो**-प्राणायाम आवश्यक है। **सो**-वह (प्राणायाम) **मुणिजणेहि**-मुनिजन व **जोगीहिं**-योगियों के द्वारा **सव्वदा**-सर्वदा **पसंसणीयो**-प्रशंसनीय है।

पाणायामेण विणा, णो संभवो चित्त-जयणं कया वि।
तम्हा पाणायामो, जाणिदव्वो णाणिजणेहिं।।88।।

अन्वयार्थ-पाणायामेण-प्राणायाम के **विणा**-बिना **चित्त-जयणं**-

चित्त को जीतना **कयावि**-कदापि **संभवो**-संभव **णो**-नहीं है **तम्हा**-इसीलिए **णाणिजणेहिं**-ज्ञानीजनों के द्वारा **पाणायामो**-प्राणायाम **जाणिदव्वो**-जानना चाहिए।

प्राणायाम का स्वरूप

आणापाणस्स विही, पाणायामो सया मुणेदव्वो।
आणापाणेण विणा, णो जीवो जीविदुं सक्को।।89।।

अन्वयार्थ-आणापाणस्स-श्वासोच्छ्वास की **विही**-विधि **पाणायामो**-प्राणायाम **सया**-सदा **मुणेदव्वो**-जानना चाहिए **आणापाणेण**-श्वासोच्छ्वास के **विणा**-बिना **जीवो**-जीव **जीविदुं**-जीने में **सक्को**-शक्य **णो**-नहीं है।

श्वासोच्छ्वास दुरुपयोग नहीं

ण करेज्ज दुरुवजोगं, एगस्स वि आणापाणस्स कया।
ववहार-चेयणा व हि, आणापाणो मुणेदव्वो।।90।।

अन्वयार्थ-एगस्स-एक **आणापाणस्स**-श्वासोच्छ्वास का **वि**-भी **कया**-कभी **दुरुवजोगं**-दुरुपयोग **ण**-नहीं **करेज्ज**-करना चाहिए **आणापाणो**-श्वासोच्छ्वास **ववहार-चेयणा व**-व्यवहार चेतना के समान **हि**-ही **मुणेदव्वो**-जानना चाहिए।

जीवणमाणापाणो, होज्ज कहं जीवणं विणा तेणं।
णिवज्जिय णासदे तं, जीवणं हि णस्सदे जो सो।।91।।

अन्वयार्थ-आणापाणो-श्वासोच्छ्वास **जीवणं**-जीवन है (क्योंकि) **तेणं**-उसके **विणा**-बिना **जीवणं**-जीवन **कहं**-किस प्रकार **होज्ज**-हो सकता है **जो**-जो **णिवज्जिय**-सोकर **तं**-उसका (श्वासोच्छ्वास का) **णासदे**-नाश करता है **सो**-वह (अपना) **जीवणं**-जीवन **हि**-ही **णस्सदे**-नाश करता है।

श्वांस नियंत्रण

सास-गहणं विहीए, आरोग्ग-हेदू अणाइयालादु।
धम्म-संवड्ढणत्थं, पाणायामं करेज्ज सया।।92।।

अन्वयार्थ-विहीए-विधिपूर्वक **सास-गहणं**-श्वास ग्रहण करना **अणाइयालादु**-अनादिकाल से **आरोग्ग-हेदू**-आरोग्य का हेतु है। **धम्म-संवड्ढणत्थं**-धर्म संवर्धन के लिए **सया**-सदा **पाणायामं**-प्राणायाम **करेज्ज**-करना चाहिए।

त्रिविध प्राणायाम

पूरग-कुंभग-रेचग-भेदादो य तिविहो विसेसेणं।
पाणायामो णेयो, करिदव्वो भवीहि सेयस्स।।93।।

अन्वयार्थ-विसेसेणं-विशेष रूप से **पूरग-कुंभग-रेचग-भेदादो य**-पूरक, कुंभक और रेचक के भेद से **पाणायामो**-प्राणायाम **तिविहो**-तीन प्रकार का **णेयो**-जानना चाहिए (यह) **भवीहि**-भव्यों के द्वारा **सेयस्स**-कल्याण के लिए **करिदव्वो**-किया जाना चाहिए।

प्राणायाम से लाभ

उदरस्स सव्व-रोया, उरस्स तहा कंठ-मुह-संबंधी।
कण्णक्खणासादीण, खयंते पाणायामेणं।।94।।

अन्वयार्थ-पाणायामेणं-प्राणायाम के द्वारा **उदरस्स**-उदर **उरस्स**-हृदय **कंठ-मुह-संबंधी**-कंठ, मुख संबंधी **तहा**-तथा **कण्णक्ख-णासादीण**-कर्ण, आँख, नाक आदि के **सव्व-रोया**-सभी रोग **खयंते**-नष्ट हो जाते हैं।

पूरकादि स्वरूप

सास-गहणं पूरगो, सास-णिरोहणं कुंभगो णेयो।
सास-णिस्सारणं तह, रेचगो वाहि-विणासगो हु।।95।।

अन्वयार्थ-सास-गहणं-श्वास का ग्रहण **पूरगो**-पूरक **सास-णिरोहणं**-श्वास का निरोध **कुंभगो**-कुंभक **तह**-तथा **सास-णिस्सारणं**-श्वास का बाहर निकालना **हु**-निश्चय से **वाहि-विणासगो**-व्याधि का विनाशक **रेचगो**-रेचक **णेयो**-जानना चाहिए।

रेचक से लाभ

सव्वुदर-वाही कफो, णियमा रेचग-पाणायामेणं।
देह-पोसणं होज्जा, बहु-रोया खलु विणस्संते।।96।।

अन्वयार्थ-रेचग-पाणायामेणं-रेचक प्राणायाम के द्वारा **णियमा**-नियम से **देह-पोसणं**-देह का पोषण **होज्जा**-होता है **सव्वुदर-वाही**-सर्व उदर व्याधि **कफो**-कफ **बहु-रोया**-बहुत से रोग **खलु**-निश्चय से **विणस्संते**-विनष्ट हो जाते हैं।

कुंभकादि काल

सास-गहण-समयादो, होज्जा दुउणो कालो कुंभगस्स।
कुंभगादो वि दुउणो, होज्ज हु रेचगस्स कमेणं।।97।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय से **सास-गहण-समयादो**-श्वास ग्रहण के समय से **दुउणो**-दुगुना **कुंभगस्स**-कुंभक का **कालो**-काल **होज्जा**-होता है **कुंभगादो**-कुंभक से **वि**-भी **दुउणो**-दुगना काल **कमेणं**-क्रम से **रेचगस्स**-रेचक का **होज्ज**-होता है।

पूरकादि फल

जोगी करेज्ज णिच्चं, पूरगं कुंभगं रेचगं कमसो।
समंते सव्व-वियार-सोग-रोया इमेहि णियमा।।98।।

अन्वयार्थ-जोगी-योगियों को **णिच्चं**-नित्य **कमसो**-क्रमश: **पूरगं**-पूरक **कुंभगं**-कुंभक **रेचगं**-रेचक **करेज्ज**-करना चाहिए **इमेहि**-इनसे **णियमा**-नियम से **सव्व-वियार-सोग-रोया**-सर्व विकार, शोक और रोगों का **समंते**-शमन होता है।

उप्पज्जदे सरीरे, कंति-सुंदेरं रूवलावण्णं।
वड्ढदे सहणसत्ती, देह-मणप्पबलमुच्छाहो।।99।।

अन्वयार्थ-(प्राणायाम से) **सरीरे**-शरीर में **कंति-सुंदेरं**-कांति, सौन्दर्य **रूवलावण्णं**-रूप लावण्य **उप्पज्जदे**-उत्पन्न होता है (व) **सहणसत्ती**-सहनशक्ति **देह-मण-अप्पबलं**-देह-मन-आत्मबल (और) **उच्छाहो**-उत्साह **वड्ढदे**-बढ़ता है।

कुंभक प्राणायाम से लाभ

हिअयंबुजं विहसेदि, सव्वदा थेरिअं बलं वड्ढेदि।
अंतगंथी फुटेदि हु, कुंभग-पाणायामेणं च।।100।।

अन्वयार्थ-कुंभग-पाणायामेणं-कुंभक प्राणायाम के द्वारा **सव्वदा**-सर्वदा **हिअयंबुजं**-हृदयाम्बुज **विहसेदि**-विकसित होता है **थेरिअं**-स्थिरता **बलं**-बल **वड्ढेदि**-बढ़ता है (और) **हु**-निश्चय से **अंतगंथी**-अत: ग्रंथी **फुटेदि**-प्रस्फुटित होती है।

पाणायामेण मणं, थंभदि जंति वियारी भावा णो।
खयंति विसय-कसाया, अविज्जादी अवि जोगीणं।।101।।

अन्वयार्थ-पाणायामेण-प्राणायाम से **मणं**-मन **थंभदि**-स्थिर होता है **वियारी**-विकारी **भावा**-भाव **णो जंति**-उत्पन्न नहीं होते (एवं) **जोगीणं**-योगियों के **विसय-कसाया**-विषय-कषाय (और) **अविज्जादी**-अविद्या आदि **अवि**-भी **खयंति**-नष्ट होते हैं।

ध्यान सिद्धि

चदु-मंडल-णिमित्तेण, होदि सिद्धी झाणस्स णियमा जो।
णिच्चलो हु जोगी तं, अज्झासेदि पाणायामं।।102।।

अन्वयार्थ-चदु-मंडल-णिमित्तेण-चार मंडलों के निमित्त से **णियमा**-नियम से **झाणस्स**-ध्यान की **सिद्धी**-सिद्धी **होदि**-होती है **तं**-इसीलिए **जो**-जो **जोगी**-योगि **णिच्चलो**-निश्चल है (वह) **हु**-निश्चय से **पाणायामं**-प्राणायाम का **अज्झासेदि**-अध्ययन करता है।

चदु मंडल

पत्थिवं वारुणं तह, वायवीय-मग्गिमंडलं णेयं।
चदु-पुरं मंडलं वा, पडिसंवेयिदव्वं मुणीहि।।103।।

अन्वयार्थ-चदु-पुरं-चार प्रकार के पुर **वा**-या **मंडलं**-मंडल **णेयं**-जानने चाहिए **पत्थिवं**-पार्थिव **वारुणं**-वारुण **वायवीयं**-वायवीय **तह**-तथा **अग्गिमंडलं**-अग्निमंडल। **मुणीहि**-मुनियों के द्वारा (इसका) **पडिसंवेयिदव्वं**-अनुभव किया जाना चाहिए।

जैसा रूप वैसा फल

पाणायामज्झक्खो, मंडलेहि कुणदि झाणस्स सिद्धिं।
जस्स जहा रूवं खलु, णेयं तस्स फलं वि तहेव।।104।।

अन्वयार्थ-पाणायामज्झक्खो-प्राणायाम का अधिष्ठाता **मंडलेहि**-मंडलों के द्वारा **झाणस्स**-ध्यान की **सिद्धिं**-सिद्धि **कुणदि**-करता

है। **जस्स**-जिसका **जहा**-जैसा **रूवं**-रूप है **खलु**-निश्चय से **तस्स**-उसका **फलं**-फल **वि**-भी **तहेव**-वैसा ही **णेयं**-जानना चाहिए।

पार्थिव मंडल

चित्त-ठिदीइ कारणं, सुह-संतीण वज्ज-चिण्ह-जुत्तं।
वत्तं खिदि-बीयेणं, चदुसरं पत्थिव-मंडलं च।।105।।

अन्वयार्थ-पत्थिव-मंडलं-पार्थिव मंडल **चित्त-ठिदीइ**-चित्त की स्थिति तथा **सुह-संतीण**-सुख-शांति का **कारणं**-कारण **वज्ज-चिण्ह-जुत्तं**-वज्र के चिह्न से युक्त **खिदि-बीयेणं**-पृथ्वी बीज (क्ष अक्षर) से **वत्तं**-व्याप्त **य**-और **चदुसरं**-चौकोर है।

पुढवि-मंडलं णिच्चं, णेयं हेदू आसण-सिद्धीए।
तत्त-हेमव्व पीदं, पस्सदि तं अब्भास-बलेण।।106।।

अन्वयार्थ-पुढवि-मंडलं-पृथ्वी मंडल **आसण-सिद्धीए**-आसन की सिद्धि का **हेदू**-हेतु (तथा) **तत्त-हेमव्व**-तपाये हुए सोने के समान **पीदं**-पीत वर्ण वाला **णेयं**-जानना चाहिए। (योगी) **अब्भास-बलेण**-अभ्यास के बल से **णिच्चं**-नित्य **तं**-उसे **पस्सदि**-देखता है।

पृथ्वी तत्त्व

बारसंगुलंतं खलु, होज्जा सीदुण्ह-मीस-उस्सासो।
इसुव्व वहेदि तच्चं, उवादेयं थिर-कज्जेसुं।।107।।

अन्वयार्थ-पृथ्वी तत्त्व में वायु **इसुव्व**-बाण के समान (सीधी) **बारसंगुलंतं**-बारह अंगुल तक **वहेदि**-बहती है (उसमें) **उस्सासो**-उच्छ्वास **सीदुण्ह-मीसो**-शीतोष्ण अर्थात् मिश्र **होज्ज**-होता है **तच्चं**-पृथ्वी तत्त्व **खलु**-निश्चय से **थिर-कज्जेसुं**-स्थिर कार्यों में **उवादेयं**-उपादेय है।

मिट्ठ-रस-संजुत्तं च, परम-पीदि-कारणं मुणेदव्वं।
सुभिक्ख-सुहाण हेदू, दुब्भिक्ख-रोयाण-णासगं।।108।।

अन्वयार्थ-पृथ्वी तत्त्व को **मिट्ठ-रस-संजुत्तं**-मिष्ट रस से संयुक्त **परम-पीदि-कारणं**-परम प्रीति का कारण **सुभिक्ख-सुहाण हेदू**-सुभिक्ष व सुख का हेतु **च**-और **दुब्भिक्ख-रोयाण-णासगं**-दुर्भिक्ष व रोग का नाशक **मुणेदव्वं**-जानना चाहिए।

वारुण मंडल

सिद्धसिलायारं तह, वारुण-चिंधाल-वारुणं सुब्भं।
इंदुव्व पयासपुंज-ममिय-णीर-सिंचिदं णिच्चं।।109।।

अन्वयार्थ-**वारुण-चिंधाल-वारुणं**-वारुण (व) अक्षर से चिह्नित वारुण मंडल **सिद्धसिलायारं**-सिद्धशिलाकार **सुब्भं**-शुभ्र **इंदुव्व**-चन्द्रमा के समान **पयासपुंजं**-प्रकाश पुंज **तह**-तथा **अमिय-णीर-सिंचिदं**-अमृत जल से सींचा हुआ है।

चंदव्व कंति-जुत्तं णंद-कारण मुच्छाह-वड्ढगं च।
दाह-ताव-विणासगं, जराइ-रोय-धंसगं जाण।।110।।

अन्वयार्थ-वारुण मंडल को **चंदव्व कंति-जुत्तं**-चंद्रमा के समान कांति से युक्त **णंद-कारणं**-आनंद का कारण **उच्छाह-वड्ढगं**-उत्साह वर्धक **दाह-ताव-विणासगं**-दाह-ताप का विनाशक **च**-और **जराइ-रोय-धंसगं**-बुढ़ापा आदि रोगों का ध्वंसक **जाण**-जानो।

होज्ज बारसंगुलादु, सोडसंतमुस्सासहोदिसाए।
सवर संति-सुकारगं, वइर-विरोहाण णासगं च।।111।।

अन्वयार्थ-वारुण मंडल में **उस्सासो**-उच्छ्वास **बारसंगुलादु**-बारह अंगुल से **सोडसंतं**-सोलह अंगुल तक **अहोदिसाए**-नीचे की ओर

होज्ज-होता है। यह **वइर-विरोहाण-णासगं**-बैर-विरोध का नाशक **च**-और **सवर-संति-सुकारगं**-स्वपर शांति का सुकारक है।

जल तत्त्व

जल-तच्च-पाहण्णेण, चित्तं पप्फुल्लदि णंददि णिच्चं।
पित्तंबाण-सामगं, बहुवजोगी संति-कज्जेसु।।112।।

अन्वयार्थ-जल-तच्च-पाहण्णेण-जल तत्त्व की प्रधानता से **चित्तं**-चित्त **णिच्चं**-नित्य **पप्फुल्लदि**-प्रफुल्लित **णंददि**-आनंदित होता है। यह **पित्तंबाण-सामगं**-अम्ल-पित्त शामक और **संति-कज्जेसु**-शांति के कार्यों में **बहुवजोगी**-बहु उपयोगी है।

वायुमंडल

णीलंजणोव्व य कंति-जुदं विचल्लियं बिंदु-संकिण्णं।
वलयायारं किलेस-भय-हारगं वाउ-मंडलं।।113।।

अन्वयार्थ-णीलंजणोव्व-नीले अंजन के समान **कंति-जुदं**-कांति से युक्त **विचल्लियं**-चंचल **बिंदु-संकिण्णं**-बिन्दुओं से व्याप्त **वलयायारं**-वलयाकार **किलेस-भय-हारगं य**-क्लेश और भय का हारक **वाउ-मंडलं**-वायु मंडल है।

अइ-चंचलादो सया, चिंतेज्जा असुह-भाव-णासेदुं।
सु-भावुप्पत्ति-याले, वाउ-मंडलं णेव कया वि।।114।।

अन्वयार्थ-अइ-चंचलादो-अति चंचल होने से **असुह-भाव-णासेदुं**-अशुभ भाव के नाश के लिए **वाउ-मंडलं**-वायु मंडल का **सया**-सदा **चिंतेज्जा**-चिंतन करना चाहिए (तथा) **सु-भावुप्पत्ति-याले**-शुभ भाव की उत्पत्ति के काल में (वायुमंडल का) **कया वि**-कभी भी (चिंतन) **णेव**-नहीं करना चाहिए।

णासाइ सडंगुलादु, सय पवहेदि दक्खिणे वामे वा।
वाउ-मंडलं णेयं, वियार-णासगं कारगं वि।।115।।

अन्वयार्थ-**वाउ-मंडलं**-वायु मंडल को **सय**-सदा **वियार-णासगं**-विकार का नाशक (व) **कारगं वि**-कारक भी **णेयं**-जानना चाहिए। (इसमें वायु) **णासाइ**-नासा से **सडंगुलादु**-छः अंगुल तक **दक्खिणे**-दाएँ **वा**-व **वामे**-बाएँ **पवहेदि**-प्रवाहित होती है।

य-बीयक्खर-चिंधणं, अंबं पवहदि समुद्द-तरंगोव्व।
वाउ-अवत्तये होज्ज, वाउ-विगारादी दोसा हु।।116।।

अन्वयार्थ-यह **य-बीयक्खर-चिंधणं**-'य' बीजाक्षर से चिह्नित (तथा) **अंबं**-स्वाद में खट्टा है। (उसमें वायु) **समुद्द-तरंगोव्व**-समुद्र की तरंग के समान **पवहदि**-प्रवाहित होती है। **वाउ-अवत्तये**-वायु के अव्यवस्थित (असंतुलित) **होज्ज**-होने पर **हु**-निश्चय से **वाउ-विगारादी**-वायु विकारादि **दोसा**-दोष होते हैं।

अग्नि मंडल

अग्गि-कणव्व-पीदं च, तच्छंड मुड्ढं सहस्स-जालव्व।
सत्थिग-चिण्ह-संजुदं, तिभुजायार-मग्गि-मंडलं।।117।।

अन्वयार्थ-**अग्गि-कणव्व-पीदं**-अग्नि कण के समान पीत वर्णी **तच्छंड**-भयंकर **उड्ढं**-उर्ध्व दिशा में बहने वाली **सहस्स-जालव्व**-सहस्र ज्वालाओं के समान **सत्थिग-चिण्ह-संजुदं**-स्वास्तिक चिह्न से संयुक्त **तिभुजायारं**-त्रिभुजाकार **अग्गि-मंडलं**-अग्नि मंडल है।

र-वीयक्खर-चिंधणं, अग्गिच्च-मंडलं तिक्ख-सादू हु।
सुह-कज्ज-विणासगं च, असुह-फल-दायगं सव्वदा।।118।।

अन्वयार्थ-**हु**-निश्चय से **र-बीयक्खर-चिंधणं**-र बीजाक्षर से चिह्नित

अग्गिच्च-मंडलं-आग्नेय मंडल **तिक्ख-सादू**-तीखे स्वाद वाला है (यह) **सव्वदा**-सर्वदा **सुह-कज्ज-विणासगं**-शुभ कार्यों का विनाशक **च**-और **असुह-फल-दायगं**-अशुभ फल का दायक है।

अग्नि तत्त्व

वड्ढडे कोहो अस्स, सव्वदा तच्चस्स पाहण्णेणं।
सूणियं कर-पादेसु, होज्जा अवि अण्ण-वाहीओ।।119।।

अन्वयार्थ-**अस्स**-इस **तच्चस्स**-तत्त्व की **पाहण्णेणं**-प्रधानता से **सव्वदा**-सर्वदा **कोहो**-क्रोध **वड्ढडे**-वृद्धिंगत होता है **कर-पादेसु**-हाथ-पैर में **सूणियं**-सूजन व **अण्ण-वाहीओ**-अन्य व्याधियाँ **अवि**-भी **होज्जा**-होती हैं।

चदुरंगुलं च उड्ढे, कफ-णासगं दाह-कारगं होदि।
भालम्मि दिव्व-कंती, णो संताकस्सगा जोगी।।120।।

अन्वयार्थ-अग्नि तत्त्व में वायु **चदुरंगुलं**-चार अंगुल **उड्ढे**-उर्ध्व में (बहती है, यह) **कफ-णासगं**-कफ नाशक **च**-और **दाह-कारगं**-दाह कारक **होदि**-होती है। (योगी के) **भालम्मि**-भाल में **दिव्व-कंती**-दिव्य कांति होती है (किन्तु) **जोगी**-योगी **संताकस्सगा**-शांत व आकर्षक **णो**-नहीं होता।

आग्नेय मंडल प्रभाव

तं सोग-रोय-किलेस-भयाण हेदू-रुद्दट्ट-झाणाण।
असुह-फल-दायगं तह, इह सुकज्जं ण आरंभेज्ज।।121।।

अन्वयार्थ-**तं**-वह (आग्नेय मंडल) **सोग-रोय-किलेस-भय-हेदू**-शोक, रोग, क्लेश, भय का हेतु (तथा) **अट्ट-रुद्द-झाणाण**-आर्त्त व रौद्र ध्यान का (हेतु है) (यह) **असुह-फल-दायगं**-अशुभ फलदायक

है **तह**-तथा **इह**-इसमें **सुकज्जं**-शुभकार्य **ण आरंभेज्ज**-आरंभ नहीं करना चाहिए।

तंत-विज्जाइ णिउणं, समत्थं डहेदुं असुह-कम्माणि।
कया वि चिंतेज्ज अग्गि-बीयं पावं विणासेदुं।।122।।

अन्वयार्थ-**तंत-विज्जाइ**-तंत्र विद्या में **णिउणं**-निपुण (यह अग्नि मंडल) **असुह-कम्माणि**-अशुभ कर्मों को **डहेदुं**-दहने में **समत्थं**-समर्थ है **कया वि**-कभी भी **पावं**-पाप के **विणासेदुं**-विनाश के लिए **अग्गि-बीयं**-अग्नि बीज का **चिंतेज्ज**-चिंतन करना चाहिए।

पुरंदर वायु

णासा-छिड्डुं पूरिय, अप्पुण्ह-वाऊ णिम्मलो पीदो।
पवहदि सणिअं सणिअं, पुरंदर-वाऊ णादव्वो।।123।।

अन्वयार्थ-जो **णासा-छिड्डुं**-नासिका के छिद्र को **पूरिय**-पूर्ण करके **अप्पुण्हं**-अल्प ऊष्ण **णिम्मलो**-निर्मल **पीदो**-वर्ण से पीत (वायु) **सणिअं-सणिअं**-धीरे-धीरे **पवहदि**-प्रवाहित होती है (उसे) **पुरंदर-वाऊ**-पुरंदर वायु **णादव्वो**-जानना चाहिए।

वरुण वायु

तिव्व-वेग-जुत्तो जो, सीयलो सुब्भो बारसंगुलं च।
पवहदि अहो-दिसाए, वरुण-वाऊ खलु सेयकरो।।124।।

अन्वयार्थ-**जो**-जो **तिव्व-वेग-जुत्तो**-तीव्र वेग से युक्त **सीयलो**-शीतल **सुब्भो**-शुभ्र-धवल **च**-और **बारसंगुलं**-बारह अंगुल **अहो-दिसाए**-अधो दिशा में **पवहदि**-प्रवाहित होती है (वह) **वरुण-वाऊ**-वरुण वायु **खलु**-निश्चय से **सेयकरो**-श्रेयस्कर है।

पवन वायु

सडंगुलं पमाणं च, किण्हो अवि किंचि सीदो उण्हो हु।
तिरिअं पवहेदि सया, पवण-वाऊ हि मुणेदव्वो।।125।।

अन्वयार्थ-जो **किण्हो**-कृष्णवर्णी **किंचि**-किंचित् **सीदो**-शीत **च**-और (किंचित्) **उण्हो**-उष्ण **अवि**-भी है, **सया**-सदा **सडंगुलं-पमाणं**-छः अंगुल प्रमाण **तिरिअं**-तिरछी **पवहेदि**-प्रवाहित होती है (उसे) **हु**-निश्चय से **पवण-वाऊ**-पवन वायु **हि**-ही **मुणेदव्वो**-जानना चाहिए।

ज्वलन वायु

बाल-सूरव्व अरुणो, उड्ढे पवहदे मंडलायारो।
चदुरंगुलं पमाणं, अदिसय-उण्हो जलण-वाऊ।।126।।

अन्वयार्थ-जो **बाल-सूरव्व**-बाल सूर्य के समान **अरुणो**-अरुणवर्णी **उड्ढे**-उर्ध्व दिशा में **मंडलायारो**-मंडलाकार **पवहदे**-प्रवाहित होती है (वह) **चदुरंगुलं**-चार अंगुल **पमाणं**-प्रमाण वाली **अदिसय-उण्हो**-अतिशय ऊष्ण **जलण-वाऊ**-ज्वलन वायु है।

चदु वायु प्रभाव

थंभणादि-कज्जेसुं, पुरंदरं वरुणं उत्तमेसुं च।
चल-मलिणेसुं पवणं, वसीयरणादीसुं जलणं।।127।।
संगच्छेज्ज सव्वदा, णियकज्जादिं सफलेदुं जोगी।
सव्वासुह-णासेदुं, अब्भासं विणा संभवो ण।।128।।

अन्वयार्थ-**णियकज्जादिं**-निज कार्यों में **सफलेदुं**-सफल होने के लिए (और) **सव्वासुह-णासेदुं**-सर्व अशुभ के नाश के लिए **जोगी**-योगी को **थंभणादि-कज्जेसुं**-स्तंभनादि कार्यों में **पुरंदरं**-पुरंदर वायु **उत्तमेसुं**-उत्तम कार्यों में **वरुणं**-वरुण वायु **चल-मलिणेसुं**-चंचल

व मलिन कार्यों में **पवणं**-पवन वायु को **च**-और **वसीयरणादीसुं**-वशीकरण आदि कार्यों में **जलणं**-ज्वलन वायु को **सव्वदा**-सर्वदा **संगच्छेज्ज**-स्वीकार करना चाहिए **अब्भासं**-अभ्यास के **विणा**-बिना (यह) **संभवो**-संभव **ण**-नहीं है।

मंगलकारी पुरंदर वायु

पुरंदरो मंगल्लो, कल्लाण-णिमित्त-सूअगो भणिदो।
रज्जित्थि-गय-छत्तादि-अभिट्ठिअ-फल-संपत्तीए।।129।।

अन्वयार्थ-पुरंदरो-पुरंदर वायु **मंगल्लो**-मंगलकारी **कल्लाण-णिमित्तं**-कल्याण में निमित्त (एवं) **रज्जित्थि-गय-छत्तादि-अभिट्ठिअ-फल-संपत्तीए**-राज्य, स्त्री, हाथी, छत्रादि अभीष्ट फल की संप्राप्ति की **सूअगो**-सूचक **भणिदो**-कही गई है।

दहन वायु प्रभाव

विग्घ-समूह-भय-सोग-पीडाणं-सूअगो दहण-वाऊ।
सूअगो विणासस्स वि, दाह-सरूव-संजुत्तो तह।।130।।

अन्वयार्थ-दहण-वाऊ-दहन वायु **विग्घ-समूह-भय-सोग-पीडाणं-सूअगो**-विघ्न समूह, भय, शोक, दुःख-पीड़ा की सूचक है (वह) **विणासस्स**-विनाश की **वि**-भी **सूअगो**-सूचक है **तह**-तथा **दाह-सरूव-संजुत्तो**-दाह स्वरूप से संयुक्त है।

पवन वायु प्रभाव

पवणम्मि किसि-सेवादि-सिद्ध-कज्जाइं अवि विणस्संते।
उप्पज्जंति मिच्चु-भय-वइरभाव-कट्ठ-दुहादीणि।।131।।

अन्वयार्थ-पवणम्मि-पवन वायु होने पर **किसि-सेवादि-सिद्ध-कज्जाइं**-कृषि, सेवादि सिद्ध कार्य **अवि**-भी **विणस्संते**-नष्ट हो

जाते हैं **मिच्चु-भय-वइरभाव-कट्ठ-दुहादीणि**-मृत्यु, भय, वैरभाव, कष्ट, दु:ख आदि **उप्पज्जंति**-उत्पन्न होते हैं।

वायु ग्रहण व त्याग प्रभाव

मणचिंतित-फलं उत्त-चदु-वाऊ सूअंति पवेसे सय।
णिस्सरणे दुक्ख-पुण्ण-अकल्लाणं संकडादिं च।।132।।

अन्वयार्थ-उत्त-चदु-वाऊ-उक्त चारों वायु **सय**-सदा **पवेसे**-प्रवेश के समय **मणचिंतित-फलं**-मनचिंतित फल को **सूअंति**-सूचित करती हैं (और) **णिस्सरणे**-निकलते समय **दुक्ख-पुण्ण-अकल्लाणं**-दु:ख से पूर्ण अकल्याण **च**-और **संकडादिं**-संकट आदि को सूचित करती हैं।

सूरिंदु-मग्गेहिं च, पविसंता वाऊ सूअंति सुहं।
णिस्सरंता वाऊ हु, तस्स विवरीद-किलेस-दुहं।।133।।

अन्वयार्थ-सूरिंदु-मग्गेहिं-सूर्य और चंद्र मार्ग से **पविसंता**-प्रवेश करती हुई **वाऊ**-सभी वायु **सुहं**-सुख की **सूअंति**-सूचना करती हैं **च**-और **णिस्सरंता**-निकलती हुई **वाऊ**-वायु **हु**-निश्चय से **तस्स**-उसके **विवरीद-किलेस-दुहं**-विपरीत क्लेश और दु:ख को सूचित करती हैं।

वाम छिद्र से प्रवेश वायु प्रभाव

वरुण-पुरंदर-वाऊ, रिअंता वाम-छिड्डेण णासाइ।
मंगल-कज्ज-सिद्धीइ, सुहसंतीण-कारगा होज्ज।।134।।

अन्वयार्थ-णासाइ-नासिका के **वाम-छिड्डेण**-वाम छिद्र से **रिअंता**-प्रवेश करती हुई **वरुण-पुरंदर-वाऊ**-वरुण और पुरंदर वायु **सुहसंतीण**-सुख, शांति **मंगलकज्जसिद्धीइ कारगा**-मंगल कार्य सिद्धि की कारक **होज्जा**-होती है।

दक्षिण छिद्र से प्रवेश प्रभाव

णिग्गच्छंता य दहण-पवण-वाऊ हु दक्खिण-मग्गेणं।
कज्ज-विणासगा सया, मण्णे दुक्खस्स कारणं वि।।135।।

अन्वयार्थ-दक्खिण-मग्गेणं-दक्षिण मार्ग से **णिग्गच्छंता**-निकली हुई **दहण-पवण-वाऊ य**-दहन और पवन वायु **हु**-निश्चय से **सया**-सदा **कज्ज-विणासगा**-कार्यों की विनाशक व **दुक्खस्स**-दु:ख की **कारणं**-कारण **वि**-भी **मण्णे**-मानी गई हैं।

सूर्य वा चंद्र मार्ग से वायु

दहण-पवण-वाऊ बे, मज्झिमा वाम-चंदे विहरंता।
दक्खिणम्मि विहरंता, वरुण-पुरंदरा तहेव अवि।।136।।

अन्वयार्थ-वाम-चंदे-वाम नासिका अर्थात् चंद्र मार्ग में **विहरंता**-विचरण करती हुई **दहण-पवन-वाऊ बे**-दहन और पवन दो वायु **मज्झिमा**-मध्यम कही गई हैं **दक्खिणम्मि**-दक्षिण नासिका में **विहरंता**-विचरण करती हुई **वरुण-पुरंदरा**-वरुण और पुरंदर वायु **अवि**-भी **तहेव**-उसी प्रकार अर्थात् मध्यम कही गई हैं।

सूर्योदय में उत्तम स्वर

वाम-सरो हु उत्तमो, अक्कुदयम्मि तहा सुक्क-पक्खम्मि।
पढम-तिदिय-पंचम-तिग-दिवसेसुं सेसेसु सूरो।।137।।

अन्वयार्थ-अक्कुदयम्मि-सूर्योदय के समय **सुक्क-पक्खम्मि**-शुक्ल पक्ष में **पढम-तिदिय-पंचम-तिग-दिवसेसुं**-प्रथमत्रिक (प्रथमा, द्वितीया, तृतीया), तृतीय त्रिक (सप्तमी, अष्टमी, नवमी) पंचमत्रिक (त्रयोदशी, चतुर्दशी, पूर्णिमा) दिनों में **हु**-निश्चय से **वाम-सरो**-बायाँ स्वर **उत्तमो**-उत्तम है **तहा**-तथा **सेसेसु**-शेष दिनों में **सूरो**-सूर्य अर्थात् दायाँ स्वर उत्तम है।

दक्खिण-सरो उत्तमो, अक्कुदयम्मि तहा किण्ह-पक्खम्मि।
पढम-तिदिय-पंचम-तिग-दिवसेसुं सेसेसु वामो।।138।।

अन्वयार्थ-अक्कुदयम्मि-सूर्योदय के समय **किण्ह-पक्खम्मि**-कृष्ण पक्ष में **पढम-तिदिय-पंचम-तिग-दिवसेसुं**-प्रथमत्रिक (प्रथमा, द्वितीया, तृतीया) तृतीयत्रिक (सप्तमी, अष्टमी, नवमी) पंचमत्रिक (त्रयोदशी, चतुर्दशी, अमावस्या) दिनों में **दक्खिण-सरो**-दायाँ स्वर **उत्तमो**-उत्तम है **तहा**-तथा **सेसेसु**-शेष दिनों में **वामो**-बायाँ स्वर उत्तम है।

दिवसों में उत्तम स्वर

रवि-भोम-सणिवारेसु, उत्तमो अक्क-सरो अक्कुदयम्मि।
ससि-बुह-गुरु-सुक्केसुं, सुहो वाम-सरो सय सेट्ठो।।139।।

अन्वयार्थ-अक्कुदयम्मि-सूर्योदय के समय **रवि-भोम-सणिवारेसु**-रवि, मंगल और शनिवार में **अक्क-सरो**-सूर्य स्वर **उत्तमो**-उत्तम है (तथा) **ससि-बुह-गुरु-सुक्केसुं**-सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार में **सय**-सदा **सुहो**-शुभ **वाम-सरो**-चंद्र अर्थात् वाम स्वर **सेट्ठो**-श्रेष्ठ है।

पिंगला नाड़ी

दक्खिण-सरो पिंगला-णाडी हि सिग्घं कज्ज-कारगा य।
उग्ग-पइडि-जुद-अथिरा, पवाहदि पसत्थ-धणउज्जं।।140।।

अन्वयार्थ-दक्खिण-सरो-दाहिना स्वर **हि**-ही **पिंगला-णाडी हि**-पिंगला नाड़ी है (यह) **सिग्घं**-शीघ्र **कज्ज-कारगा**-कार्यों की कारक **उग्ग-पइडि-जुद-अथिरा य**-उग्र प्रकृति से युक्त और अस्थिर है (एवं) **पसत्थ-धण-उज्जं**-प्रशस्त धनात्मक ऊर्जा को **पवाहदि**-प्रवाहित करती है।

इड़ा नाड़ी

ससि-सरो इडा-णाडी, सोम्म-सहावी पवाहदि रिणुज्जं।
सेट्ठा थिर-कज्जेसुं, अज्झप्प-संति-दायगा तह।।141।।

अन्वयार्थ-ससि-सरो-चंद्र स्वर **इडा-णाडी**-इड़ा नाड़ी है (यह) **सोम्म-सहावी**-सौम्य स्वभावी **थिर-कज्जेसुं**-स्थिर कार्यों में **सेट्ठा**-श्रेष्ठ **तह**-तथा **अज्झप्प-संति-दायगा**-अध्यात्म शांति को देने वाली है (एवं) **रिणुज्जं**-ऋणात्मक ऊर्जा को **पवाहदि**-प्रवाहित करती है।

सुषुम्ना नाड़ी

उहय-सर-संजुत्तो य, सुसुम्मा मिस्सिद-पइडि-संजुत्ता।
दीहंतं भोगीणं, असुहा सुह-हेदू जोगीण।।142।।

अन्वयार्थ-उहय-सर-संजुत्ता-उभय स्वर से संयुक्त **सुसुम्मा**-सुषुम्ना नाड़ी है, (यह) **मिस्सिद-पइडि-संजुत्ता**-मिश्रित प्रकृति से संयुक्त है **दीहंतं**-दीर्घकाल तक (सुषुम्ना का प्रवाह) **भोगीणं**-भोगियों के लिए **असुहा**-अशुभ **य**-और **जोगीण**-योगियों के लिए **सुह-हेदू**-शुभ का हेतु है।

सगुण व निर्गुण स्वर

सास-णिस्सरणं तहा, णिग्गुणो सगुण-सरो सास-गहणं।
णिग्गुणे कज्ज-विफलं, होज्जा सगुण-सरम्मि सफलं।।143।।

अन्वयार्थ-सास-णिस्सरणं-श्वास का निकलना **णिग्गुणो**-निर्गुण **तहा**-तथा **सास-गहणं**-श्वास का ग्रहण करना **सगुण-सरो**-सगुण स्वर है **णिग्गुणे**-निर्गुण स्वर में **कज्ज-विफलं**-(किया गया) कार्य विफल **होज्ज**-होता है (और) **सगुण-सरम्मि**-सगुण स्वर में (किया गया कार्य) **सफलं**-सफल होता है।

स्वरानुसार प्रश्न फल

णव-सरस्स आरंभे, उदिदो परिवट्टण-पुव्वे अत्थो।
अत्थ-सरम्मि पुच्छइ, णिरत्थगं खलु मुणेदव्वं।।144।।

अन्वयार्थ-णव-सरस्स-नवीन स्वर के **आरंभे**-आरंभ में **उदिदो**-उदित स्वर (और) **परिवट्टण-पुव्वे**-परिवर्तन से पूर्व **अत्थो**-अस्त स्वर होता है **अत्थ-सरम्मि**-अस्त स्वर में **पुच्छाइ**-प्रश्न पूछने पर **खलु**-निश्चय से **णिरत्थगं**-निरर्थक **मुणेदव्वं**-जानना चाहिए।

चंद्र स्वर में करने योग्य कार्य

करेज्जा चंद-सरम्मि, विज्जारंभ-सिलण्णास-विवाहा।
गिह-पवेसं दाणं च, सम्माणं दिक्खा-गहणं वि।।145।।

ववसाय-आरंभं च, पूयण-अणवेसण-परोवयारा।
णवाभूसण-धारणं, बहु-कला-विज्जाणब्भासं।।146।।

मंगल-कलस-ठावणं, सुह-संकप्पं रज्जाहिसेगं च।
पद-गहणं गिह-सहाण-जिणभवण-ठावणं संधिं च।।147।।

सव्व-संति-कज्जाइं, णयर-पवेसं किसिं मित्त-मिलणं।
जिण-गुरु-दंसणस्स तह, रुक्खारोवणं महि-पूयं।।148।।

णीर-सोद-णिम्माणं, तिलग-धारणं संगीदब्भासं।
सव्व-थिर-कज्जाइं हु, उज्झेज्ज अण्ण-सरं णिच्चं।।149।।

अन्वयार्थ-विज्जारंभ-सिलण्णास-विवाहा-विद्यारंभ, शिलान्यास, विवाह **गिह-पवेसं**-गृहप्रवेश **दाणं**-दान **च**-और **सम्माणं**-सम्मान **दिक्खा-गहणं**-दीक्षा ग्रहण **ववसाय-आरंभं**-व्यवसाय का आरंभ **पूयण-अणवेसण-परोवयारा**-पूजन, अन्वेषण, परोपकार **णवाभूसण- धारणं**-नव आभूषण धारण करना **च**-और **विज्जाणब्भासं**

च-नाना कला और विद्या का अभ्यास **मंगल-कलस-ठावणं**-मंगल कलश स्थापन **सुह-संकप्पं**-शुभ संकल्प **रज्जाहिसेगं**-राज्याभिषेक **पद-गहणं**-पद ग्रहण **गिह-सहाण-जिणभवण-ठावणं**-भवन सभा, जिनभवन की स्थापना **संधिं**-संधि **सव्व-संति-कज्जाइं**-सर्व शांति के कार्य **णयर-पवेसं**-नगर प्रवेश **किसिं**-कृषी **मित्त-मिलणं**-मित्र से मिलन **जिण-गुरु-दंसणस्स तह**-जिनेन्द्र देव तथा गुरु के दर्शन के लिए **गमणं**-गमन करना **रुक्खारोवणं**-वृक्षारोपण **महि-पूयं**-भूमि पूजन **णीर-सोद-णिम्माणं**-नीर के स्रोत का निर्माण **तिलग-धारणं**-तिलक धारण **संगीदब्भासं**-संगीत का अभ्यास आदि **सव्व-थिर-कज्जाइं**-सभी स्थिर कार्यों को **णिच्चं**-नित्य **चंद-सरम्मि**-चंद्र स्वर में **करेज्जा**-करना चाहिए (और) **अण्ण-सरं**-अन्य स्वर का **हु**-निश्चय से **उज्झेज्ज**-त्याग करना चाहिए।

सूर्य स्वर में करने योग्य कार्य

अक्क-सरम्मि करेज्जा, लेहणं भोयणं कयं विक्कयं।
सल्ल-चिगिच्छं ण्हाणं, वत्थु-विणिमयं मंत-सिद्धिं।।150।।

तंतादीइ साहणं, विसय-सेवणं वक्खाणं जुद्धं।
सयण-मोसहि-सेवणं, दिसा-बंधणं कूर-कज्जं।।151।।

पव्वयारोहणं सय, पाणायाम-सत्थ-विज्जब्भासं।
सिंधु-जत्तं गेंडुइं, इच्चाइ-सव्व-चर-कज्जाणि।।152।।

अन्वयार्थ-लेहणं-लेखन **भोयणं**-भोजन **कयं**-क्रय **विक्कयं**-विक्रय **सल्ल-चिगिच्छं**-शल्य चिकित्सा **ण्हाणं**-स्नान **वत्थु-विणिमयं**-वस्तु विनिमय **मंत-सिद्धिं**-मंत्र सिद्धि **तंतादीइ**-तंत्र आदि की **साहणं**-साधना **विसय-सेवणं**-विषय सेवन **वक्खाणं**-व्याख्यान **जुद्धं**-युद्ध **सयणं**-शयन **ओसहि-सेवणं**-औषधि सेवन **दिसा-बंधणं**-दिशा बंधन

कूर-कज्जं-क्रूर कार्य **पव्वयारोहणं**-पर्वतारोहण **पाणायामं**-प्राणायाम **सत्थ-विज्जब्भासं**-शस्त्र विद्या का अभ्यास **सिंधु-जत्तं**-समुद्र यात्रा **गेंडुइं**-क्रीड़ा **इच्चाइ-सव्व-चर-कज्जाणि**-इत्यादि सर्व चर कार्यों को **सय**-सदा **अक्क-सरम्मि**-सूर्य स्वर में **करेज्जा**-करना चाहिए।

अंगुलियाँ तत्त्ववाहिका

अंगुट्ठग्गि-वाहगो, तज्जणी मज्झिमा वाउ-णहाणं।
अणामिगा पुढवीए, कणिट्ठा तह णीर-तच्चस्स।।153।।

अन्वयार्थ-अंगुट्ठो-अंगूठा **अग्गि वाहगो**-अंगूठा अग्नि तत्त्व का वाहक है **तज्जणी**-तर्जनी **मज्झिमा**-मध्यमा (क्रमशः) **वाउ-णहाणं**-वायु और आकाश (तत्त्व की वाहक हैं) **अणामिगा**-अनामिका **पुढवीए**-पृथ्वी तत्त्व **तह**-तथा **कणिट्ठा**-कनिष्ठा अंगुली **णीर-तच्चस्स**-नीर तत्त्व की वाहक है।

पृथ्वी मुद्रा

अणामिगा-पोरेणं, होज्जा अंगुट्ठ-पोर-संफासे।
पुढवि-मुद्दा उच्छाह-वत्त-संति-कंतीण हेदू।।154।।

अन्वयार्थ-अणामिगा-पोरेणं-अनामिका अंगुलि के पोर से **अंगुट्ठ-पोर-संफासे**-अंगूठे के पोर का स्पर्श होने पर **पुढवी**-पृथ्वी **मुद्रा**-मुद्रा **होज्जा**-होती है (यह मुद्रा) **उच्छाह-वत्त-संति-कंतीण**-उत्साह, आरोग्य, शांति और कांति की **हेदू**-हेतु है।

जल मुद्रा

होज्जा खलु जलमुद्दा, कणिट्ठंगुट्ठ-पोर-संफासम्मि।
दिग्घाउ-हेदू रत्त-सोहग-णाण-झाण-वड्ढगा।।155।।

अन्वयार्थ-कणिट्ठंगुट्ठ-पोर-संफासम्मि-कनिष्ठा (हाथ की सबसे छोटी अंगुली) अंगुली और अंगूठे के पोर के संस्पर्श करने पर **खलु**-

निश्चय से **जल-मुद्दा**-जलमुद्रा **होज्जा**-होती है (यह मुद्रा) **दिग्घाउ-हेदू**-दीर्घायु की हेतु **रत्त-सोहगा**-रक्त शोधक (तथा) **णाण-झाण-वड्ढगा**-ज्ञान-ध्यान की वर्धक है।

सूर्य मुद्रा

अणामिगाए पोरं, अंगुट्ठ-मूलम्मि ठवणे अक्को।
उज्जा-सत्ति-वड्ढगा, चिंता-मुत्ति-हेदू णिच्चं।।156।।

अन्वयार्थ-अणामिगाए-अनामिका के **पोरं**-पोर को **अंगुट्ठ-मूलम्मि**-अंगुष्ठ के मूल में **ठवणे**-स्थापित करने पर **अक्को**-सूर्य मुद्रा होती है (वह मुद्रा) **णिच्चं**-नित्य **उज्जासत्ति-वड्ढगा**-ऊर्जा शक्ति की वर्धक **चिंतामुत्ति-हेदू**-चिंता मुक्ति की हेतु है।

आकाश मुद्रा

मज्झिमाए पोरं हु, अंगुट्ठपोर-संफासे गगणं।
कण्णपीडा-णासगा, हियय रोय-दोसाण हारगा।।157।।

अन्वयार्थ-मज्झिमाए-मध्यमा (सबसे बड़ी) अंगुली के **पोरं**-पोर को **अंगुट्ठपोर-संफासे**-अंगूठे के पोर से स्पर्श करने पर **गगणं**-गगन (आकाश मुद्रा बनती है) (यह मुद्रा) **हु**-निश्चय ही **कण्ण-पीडा-णासगा**-कर्ण पीडा की नाशक (तथा) **हिययरोय-दोसाण**-हृदय रोग और उसके दोषों की **हारगा**-हारक है।

वायु मुद्रा

तज्जणिं वालिदूणं, अंगुट्ठ-मूलम्मि ठविदे वाऊ।
वाउवियार-हारगा, अंगपीडा-णासगा होदि।।158।।

अन्वयार्थ-तज्जणिं-तर्जनी अंगुली को **वालिदूणं**-मोड़कर **अंगुट्ठ-मूलम्मि**-अंगुष्ठ के मूल में **ठविदे**-स्थापित करने पर **वाऊ**-वायु मुद्रा

बनती है (यह मुद्रा) **वाउवियार-हारगा**-वायु विकार की हारक **अंगपीडा-णासगा**-अंग पीड़ा की नाशक **होदि**-होती है।

वाम व दक्षिण नाड़ी प्रभाव

वाम-णाडी हिदकरा, संतिदायगा तहा अमियरूवा।
दक्खिणा णत्थि मंगल-मणिट्ठ-सूअग-संहारगा।।159।।

अन्वयार्थ-वाम-णाडी-वाम नाड़ी **हिदकरा**-हितकर **संतिदायगा**-शांतिदायक (तथा) **अमियरूवा**-अमृतरूप है। **दक्खिणा**-दक्षिण नाड़ी **मंगलं**-मंगल **णत्थि**-नहीं है (वह) **अणिट्ठ-सूअगा**-अनिष्ट सूचक (और) **संहारगा**-संहारक है।

दक्खिण-णाडी सुहदा, असण-जुद्धादि-विरुद्ध-कज्जेसुं।
अब्भुदय-इट्ठेसुं च, वामा णाडी हि मंगल्ला।।160।।

अन्वयार्थ-असण-जुद्धादि-विरुद्ध-कज्जेसुं-भोजन, युद्धादि विरुद्ध कार्यों में **दक्खिण-णाडी**-दक्षिण नाडी **सुहदा**-सुखद होती है। **अब्भुदय-इट्ठेसुं च**-अभ्युदय और इष्ट कार्यों में **वामा**-वाम **णाडी**-नाड़ी **हि**-ही **मंगल्ला**-मंगल करने वाली है।

सर्वश्रेष्ठ मंडल

सूराइ-णवग्गहा वि, ण सक्का संपाडिदुं जं कज्जं।
जाण सव्व-मंगल्ला, वामागद-पत्थिव-वरुणा य।।161।।

अन्वयार्थ-जं-जिस **कज्जं**-कार्य के **संपाडिदुं**-संपादन में **सूराइ-णवग्गहा**-सूर्य आदि नवग्रह **वि**-भी **सक्का**-समर्थ **ण**-नहीं हैं (किन्तु) **वामागदपत्थिव-वरुणा य**-वामनाड़ी गत पार्थिव और वरुण मंडल को **सव्व-मंगल्ला**-सर्व मंगलकारी **जाण**-जानो।

नाड़ी अनुसार विजय कथन

जअक्कारं भणदि सो, पढमस्स य णेमित्तिस्स पूरगे।
रेचगे इदर-विजयं, पुच्छआइ जुद्ध-णिमित्तम्मि।।162।।

अन्वयार्थ-किसी के द्वारा दो लोगों के मध्य **जुद्ध-णिमित्तम्मि**-युद्ध के निमित्त में **पुच्छआइ**-पूछने पर **णेमित्तिस्स**-नैमित्तिक की **पूरगे**-पूरक नाड़ी होने पर **सो**-वह **पढमस्स**-प्रथम व्यक्ति की **जअक्कारं**-विजय **भणदि**-कहता है **य**-तथा **रेचगे**-रेचक नाड़ी होने पर **इदर-विजयं**-दूसरे की विजय कहता है।

निमित्त द्वारा स्वास्थ्य फल

सव्व-मंगलं पढमं, णादु-णाम-गहणम्मि पुच्छगेणं।
वाहिद-णाम-गहणम्मि, होज्ज विवरीद-मणिट्ठ-फलं।।163।।

अन्वयार्थ-**पुच्छगेणं**-पृच्छक के द्वारा **पढमं**-प्रथम **णादु-णाम-गहणम्मि**-ज्ञाता का नाम ग्रहण करने पर **सव्व-मंगलं**-सर्व मंगल **होज्ज**-होता है (तथा) **वाहिद-णाम-गहणम्मि**-प्रथम रोगी का नाम ग्रहण करने पर **विवरीदं**-विपरीत **अणिट्ठ-फलं**-अनिष्ट फल होता है।

जय-विजय प्रश्न

वाम-ठिद-पिच्छगेणं, विजय-णिमित्त-पुच्छआइ विजयदे।
समक्खर-णामा इदर-ठिदेणं विसमक्खर-णामा।।164।।

अन्वयार्थ-**वाम-ठिद-पिच्छगेणं**-वाम भाग में स्थित पृच्छक के द्वारा **विजय-णिमित्त-पुच्छआइ**-जय विषयक प्रश्न पूछने पर **समक्खर-णामा**-समअक्षर नाम वाला (जिस योद्धा का नाम सम अक्षरों में है) **विजयदे**-विजयी होता है **इदर-ठिदेणं**-इतर (दक्षिण भाग में) स्थित के द्वारा पूछने पर **विसमक्खर-णामा**-विषम अक्षर नाम वाला विजयी होता है।

हानि-लाभ कथन

वरुण-मंडले लाहं, पत्थिवम्मि खलु दिग्घ-याल-पच्छा।
पवणम्मि तुच्छ-लाहं, अणलम्मि णिद्दिसेज्ज हाणिं।।165।।

अन्वयार्थ-**खलु**-निश्चय से **वरुण-मंडले**-वरुण मंडल में **लाहं**-लाभ **पत्थिवम्मि**-पार्थिव मंडल में **दिग्घ-याल-पच्छा**-दीर्घ काल के पश्चात् होने वाला लाभ **पवणम्मि**-पवन मंडल में **तुच्छ-लाहं**-तुच्छ लाभ (व) **अणलम्मि**-अग्नि मंडल में **हाणिं**-हानि का **णिद्दिसेज्ज**-निर्देश करना चाहिए।

वापिस लौटने रूप प्रश्न

सहसा-गमणे वरुणे, आगच्छदि पत्थिवे ठादि सुहेण।
अणले मिदो य पवणे, अण्णत्तं गच्छदि भासेज्ज।।166।।

अन्वयार्थ-किसी के **सहसा-गमणे**-सहसा (अचानक) चले जाने पर (उसके विषय में प्रश्न करने पर) **वरुणे**-वरुण मंडल में (वह) **आगच्छदि**-आता है **पत्थिवे**-पार्थिव मंडल में (वहीं) **सुहेण**-सुख से **ठादि**-ठहरता है **अणले**-आग्नेय मंडल में **मिदो**-मृतक **य**-और **पवणे**-पवन मंडल में **अण्णत्तं**-अन्यत्र **गच्छदि**-जाता है (इस प्रकार) **भासेज्ज**-कहना चाहिए।

युद्ध विषयक प्रश्न

पुरंदर-मंडले जय-महिय-इट्ठ-सिद्धिं तत्तो वरुणे।
तच्छिंड-जुद्ध-मणले, जुद्ध-णिमित्तम्मि पुच्छआइ।।167।।

पवण-मंडले णासं, वा पराजयं णेमित्तिगेहिं च।
सेण्ण-विणासं मिच्चुं, वा णिद्दिसेज्ज आयासम्मि।।168।।

अन्वयार्थ-**जुद्ध-णिमित्तम्मि**-युद्ध के निमित्त में **पुच्छआइ**-पूछने

पर **णेमित्तिगेहिं**-नैमित्तिकों के द्वारा **पुरंदर-मडंले**-पुरंदर मंडल के होने पर **जयं**-(युद्ध में) विजय **वरुणे**-वरुण मंडल के होने पर **तत्तो**-उससे भी **अहिय-इट्ठ-सिद्धिं**-अधिक इष्ट सिद्धि **अणले**-अग्नि मंडल में **तच्छिंड-जुद्धं**-भयंकर युद्ध **पवण-मंडले**-पवन मंडल में **णासं**-नाश **वा**-अथवा **पराजयं**-पराजय **च**-और **आयासम्मि**-आकाश मंडल के होने पर **सेण्ण-विणासं**-सैन्य का विनाश **वा**-अथवा **मिच्चुं**-मृत्यु का **णिद्दिसेज्ज**-निर्देश करना चाहिए।

वर्षा विषयक प्रश्न

पत्थिवम्मि वरिसेदि य, वरुणे इच्छाछंद-मणले किंचि।
पवणम्मि दुद्दिवसव्व, होज्ज मेह-समोच्छइअ-णहं।।169।।

अन्वयार्थ-पत्थिवम्मि-पार्थिव मंडल में (वर्षा विषयक प्रश्न करने पर) **वरिसेदि**-वर्षा होती है **वरुणे**-वरुण मंडल में **इच्छाछंदं**-इच्छानुसार वृष्टि होती है **अणले**-अग्नि मंडल में **किंचि**-किंचित् वर्षा होती है **पवणे**-पवन मंडल के होने पर **दुद्दिवसव्व**-दुर्दिवस के समान **णहं**-नभ (आकाश) **मेह-समोच्छइअं**-मेघों से आच्छादित **होज्ज**-होता है।

धान्य विषयक प्रश्न

वरुणम्मि धण्ण-सिद्धी, पत्थिवे उप्पत्ती सलहणीया।
अणलम्मि तुच्छ-फलं च, वाउ-णहेसु मज्झिमा जाण।।170।।

अन्वयार्थ-वरुणम्मि-वरुण मंडल मे (धान्य विषयक प्रश्न करने पर) **धण्ण-सिद्धी**-धान्य सिद्धि **पत्थिवे**-पार्थिव मंडल में **सलहणीया**-प्रशंसनीय **उप्पत्ती**-उत्पत्ति **अणलम्मि**-आग्नेय मंडल में **तुच्छ-फलं**-तुच्छ फल **च**-और **वाउ-णहेसु**-वायु व आकाश मंडल में (धान्योत्पत्ति) **मज्झिमा**-मध्यम **जाण**-जानो।

पूरक पवन में सम्मानीय जन

पूरगम्मि माणेज्जा, रायं गुरुं बंधुं सहायगं च।
पसंसणीयं सुहदं, सज्जणा सय लहंति सुफलं।।171।।

अन्वयार्थ-**पूरगम्मि**-पूरक पवन के होने पर **रायं**-राजा **गुरुं**-गुरु **बंधुं**-बंधु **च**-और **सहायगं**-सहायक का **माणेज्जा**-सम्मान करना चाहिए। (वह) **पसंसणीयं**-प्रशंसनीय व **सुहदं**-सुखद होता है (ऐसा करने पर) **सज्जणा**-सज्जन **सय**-सदा **सुफलं**-सुफल **लहंति**-प्राप्त करते हैं।

रिक्त स्वर में स्थापनीय

लाहत्थि-पुरिसेहिं च, रिणिआ दुट्ठ-सत्तु-चोरंकारा।
रित्त-सरे ठविदव्वा, तप्पर-जणा कलहादीसुं।।172।।

अन्वयार्थ-**लाहत्थि-पुरिसेहिं**-लाभार्थी पुरुषों के द्वारा **रिणिआ**-कर्जदार **दुट्ठ-सत्तु-चोरंकारा**-दुष्ट, शत्रु, चोर **च**-और **कलहादीसुं**-कलह आदि में **तप्पर-जणा**-तत्पर जनों को **रित्त-सरे**-रिक्त स्वर में **ठविदव्वा**-स्थापित किया जाना चाहिए।

जन्म विषयक प्रश्न

वरुण-पुरंदरेसु सुद-जम्मं पवणाणलेसु पुत्तीए।
गगणे गब्भविणासं, सूअदि सया णिमित्त-णाणी।।173।।

अन्वयार्थ-जन्म विषयक प्रश्न करने पर **वरुण-पुरंदरेसु**-वरुण व पुरंदर मंडल में **सुद-जम्मं**-पुत्र जन्म **पवणाणलेसु**-पवन व आग्नेय मंडल में **पुत्तीए**-पुत्री जन्म **गगणे**-आकाश मंडल में **गब्भविणासं**-गर्भ विनाश को **णिमित्त-णाणी**-निमित्त ज्ञानी **सया**-सदा **सूअदि**-सूचित करता है।

गर्भ विषयक प्रश्न

पवाहिद-सर-ठिदेणं, पिच्छगेण गब्भ-विसय-पुच्छआइ।
पुत्तुप्पत्तिं सुण्णे, पुत्तीइ सूअदि णेमित्ती।।174।।

जुगलुप्पत्तिं सूअदि, संकंतीइ णासं समे कुसलं।
सम्मुहे णउंसगस्स, सुसुम्मा-सरेण पुच्छाए।।175।।

अन्वयार्थ-पवाहिद-सर-ठिदेणं-प्रवाहित स्वर में स्थित **पिच्छगेण**-पृच्छक के द्वारा **गब्भ-विसय-पुच्छआइ**-गर्भ के विषय में पूछने पर **णेमित्ती**-नैमित्तिक **पुत्तुप्पत्तिं**-पुत्रोत्पत्ति की, **सुण्णे**-शून्य (अर्थात् खाली नासिका छिद्र की ओर खड़े होकर पूछने पर) **पुत्तीइ**-पुत्री की उत्पत्ति की **सूअदि**-सूचना करता है **सम्मुहे**-सम्मुख खड़े होकर पूछने पर **णउंसगस्स**-नपुंसक की (उत्पत्ति) **सुसुम्मा-सर-ठिदेण**-सुषुम्ना स्वर में स्थित (पृच्छक) के द्वारा **पुच्छआइ**-पूछने पर **जुगलुप्पत्तिं**-युगल उत्पत्ति **संकंतीइ**-संक्रांति में **णासं**-नाश (और) **समे**-सम अवस्था में **कुसलं**-कुशल को **सूअदि**-सूचित करता है।

स्वर परिवर्तन

पवाहिदासुह-णाडिं, जदणेणं परिअट्टदे सव्वदा।
जो सर-णादू हरदे, असुहं सो पावदे सोक्खं।।176।।

अन्वयार्थ-पवाहिदासुह-णाडिं-प्रवाहित अशुभ नाड़ी को **जदणेणं**-यत्न पूर्वक **परिअट्टदे**-परिवर्तित करना चाहिए **जो**-जो **सर-णादू**-स्वर का ज्ञाता है **सो**-वह **असुहं**-अशुभ को **हरदे**-हरता है (व) **सव्वदा**-सर्वदा **सोक्खं**-सौख्य **पावदे**-प्राप्त करता है।

निरोगी द्वारा श्वास ग्रहण

होज्ज सडसयुत्तरेग-वीसा सास-गहणं णिस्सरणं च।
णिरोइस्सहो-णिसीइ, णूणाहियं जइ रोगी सो।।177।।

अन्वयार्थ-अहो-णिसीइ-दिन-रात्रि में **णिरोइस्स**-निरोगी व्यक्ति के **सास-गहणं**-श्वास का ग्रहण करना **च**-और **णिस्सरणं**-छोड़ना **सडसयुत्तरेग-वीसा**-21600 बार **होज्ज**-होता है **जइ**-यदि (इससे) **णूणाहियं**-न्यून व अधिक है (तो) **सो**-वह **रोगी**-रोगी है।

विशेषकार्यार्थ सुषुम्ना नाड़ी त्याज्य

सुसुम्मा-णाडीए ण, करेज्ज सज्जणा विसेस-कज्जाणि।
सा अइ-कट्ठ-दायगा, जिणभत्तिं गुरुसेवं तदा।।178।।

अन्वयार्थ-सज्जणा-सज्जनों को **सुसुम्मा-णाडीए**-सुषुम्ना नाड़ी में **विसेस-कज्जाणि**-विशेष कार्य **ण**-नहीं **करेज्ज**-करने चाहिए **सा**-वह **अइ-कट्ठ-दायगा**-अति कष्ट देने वाली है। **तदा**-उस समय **जिणभत्तिं**-जिनभक्ति व **गुरुसेवं**-गुरुसेवा (करनी चाहिए)।

स्वरानुसार कदम

कडुअ सगपदं अग्गं, तमेव पवाहिद-सराणुसारेण।
गच्छेज्ज सुहकज्जाय, सव्वदा सप्फलं लहेदुं।।179।।

अन्वयार्थ-पवाहिद-सराणुसारेण-प्रवाहित स्वर के अनुसार **तमेव-सगपदं**-अपने उस ही पैर को **अग्गं**-आगे **कडुअ**-करके **सप्फलं**-सत्फल की **लहेदुं**-प्राप्ति के लिए **सव्वदा**-सर्वदा **सुह-कज्जाय**-शुभ कार्य के लिए **गच्छेज्ज**-जाना चाहिए।

'हं' बीज चिंतन

अप्पुज्जा-सत्तीए, उड्ढारोहगा कला णादव्वा।
विग्घंतगो हगारो, सव्वण्हू परूवदि समये।।180।।

अप्परमण-पदीगो य, रेफो अप्प-सुह-वायगो बिंदू।
रेफबिंदुकलाजुदं, हगारं चिंतेज्जा जोगी।।181।।

अन्वयार्थ-कला-कला **अप्पुज्जा-सत्तीए**-आत्मा की ऊर्जा शक्ति का **उड्ढारोहगा**-ऊर्ध्वारोहक **णादव्वा**-जाननी चाहिए **हगारो**-हकार **विग्घंतगो**-विघ्न अंतक है **रेफो**-रेफ **अप्परमण-पदीगो**-आत्मरमण का प्रतीक है **बिंदू**-बिन्दु **अप्प-सुह-वायगो**-आत्म सुख का वाचक है ऐसा **सव्वण्हू**-सर्वज्ञ देव **समये**-समय में **परूवदि**-कहते हैं। **जोगी**-योगी को **रेफबिंदुकलाजुदं य**-रेफ, बिन्दु और कला से युक्त **हगारं**-(हं) हकार का **चिंतेज्जा**-चिंतन करना चाहिए।

सूर-मग्गेण फुलिंग-जालाइ वेट्ठिदं णिस्सरित्तु तं।
तिव्वदाइ आगासं, गच्छदित्ति चिंतेज्जा जोगी।।182।।

पच्छा आगासादो, सणिअं सणिअं तहा ओरसंतं।
वाम-मग्गेण पविसदि, सरदिंदु-जोइसिणव्व सिदं।।183।।

णाहिमज्झम्मि ठावदि, जोगी अमियरूवं हु बीयं तं।
सुद्धप्प-णंद-हेदू, परम-संतीए विसेसेण।।184।।

अन्वयार्थ-फुलिंग-जालाइ वेट्ठिदं-अग्निकण और ज्वाला से वेष्टित **तं**-वह (हं) **सूर-मग्गेण**-सूर्य मार्ग से **णिस्सरित्तु**-बाहर निकलकर **तिव्वदाइ**-तीव्रता से **आगासं**-आकाश में **गच्छदित्ति**-जाता है इस प्रकार **जोगी**-योगी को **हु**-निश्चय से **चिंतेज्ज**-चिंतन करना चाहिए **पच्छा**-पश्चात् **आगासादो**-आकाश से **सणिअं**-धीरे **सणिअं**-धीरे

ओरसंतं-नीचे आता हुआ **वाम-मग्गेण**-वाम मार्ग से **पविसदि**-प्रवेश करता है। **सरदिंदु-जोइसिणव्व**-शरद इंदु की ज्योत्सना के समान **सिदं**-धवल **अमियरूवं**-अमृत रूप **तं**-उस **बीयं**-बीज को **जोगी**-योगी **हु**-निश्चय से **णाहिमज्झम्मि**-नाभि के मध्य **ठावदि**-स्थापित करता है (वह) **विसेसेण**-विशेष रूप से **परम-संतीए**-परम शांति **तहा**-तथा **सुद्धप्प-णंद-हेदू**-शुद्धात्मा के आनंद का हेतु है।

प्राणायाम में रंजायमान नहीं

अप्पकल्लाण-कंखी, ण रज्जदे पाणायाम-कज्जेसु।
आवस्सगं गहेज्जा, जह रोयी सेवदि ओसहिं।।185।।

अन्वयार्थ-अप्पकल्लाण-कंखी-आत्म कल्याण का आकांक्षी **पाणायाम-कज्जेसु**-प्राणायाम के कार्यों में **ण रज्जदे**-रंजायमान नहीं होता **जह**-जिस प्रकार **रोयी**-रोगी **ओसहिं**-औषधि का **सेवदि**-सेवन करता है (उसी प्रकार मात्र) **आवस्सगं**-आवश्यक को **गहेज्जा**-ग्रहण करना चाहिए।

आरोग्य कारण

आसण-पाणायामा, पाहण्णेण देहारोग्ग-हेदू।
होज्ज चित्त-सुद्धीए, परंपराए णियमेणं वि।।186।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय से **आसण-पाणायामा**-आसन और प्राणायाम **पाहण्णेण**-प्रधानता से **देहारोग्ग-हेदू**-देह के आरोग्य का हेतु हैं **परंपराए**-परम्परा के **णियमेणं**-नियम से (यह) **चित्त-सुद्धीए**-चित्त की शुद्धि का **वि**-भी (हेतु) **होज्ज**-होता है।

योगी ध्येता

इंदियं संवेल्लिच्चु, एगत्थे कुव्वदि मणमेगग्गो।
तदा हि होज्ज समत्थो, झायेदुं णियमेण जोगी।।187।।

अन्वयार्थ-जब **इंदियं**-इंद्रियों का **संवेल्लिच्चु**-संकुचन कर **एगत्थे**-एक पदार्थ में **मणमेगग्गो**-मन को एकाग्र **कुव्वदि**-करता है **तदा**-तब **हि**-ही **जोगी**-योगी **णियमेण**-नियम से **झायेदुं**-ध्यान करने में **समत्थो**-समर्थ **होज्ज**-होता है।

मोक्षार्थी को प्राणायाम बाधक

पाणायामो कयाइ, उवादेयो वि वियडि-णिवित्तीए।
मोक्खाकंखि-साहूण, पाणायामो वाहगो अवि।।188।।

अन्वयार्थ-**वियडि-णिवित्तीए**-विकृति की निवृत्ति के लिए **पाणायामो**-प्राणायाम **कयाइ**-कभी **उवादेयो**-उपादेय **वि**-भी है **मोक्खाकंखि-साहूण**-मोक्षाकांक्षी साधुओं के लिए **पाणायामो**-प्राणायाम **बाहगो**-बाधक **अवि**-भी है।

प्राणायाम—ध्यान खंडक

जो को वि संत-सत्थो, तह संवेग-वेरग्गेहिजुत्तो।
सो ण पलीएज्ज तम्हि, जम्हा सो झाण-खंडगो वि।।189।।

अन्वयार्थ-**जो**-जो **को वि**-कोई भी **संत-सत्थो**-शांत, स्वस्थ **तह**-तथा **संवेग-वेरग्गेहिजुत्तो**-संवेग व वैराग्य से संयुक्त है **सो**-उसे **तम्हि**-उसमें (प्राणायाम में) **ण पलीएज्ज**-लीन नहीं होना चाहिए **जम्हा**-क्योंकि **सो**-वह **झाण-खंडगो**-ध्यान का खंडक **अवि**-भी है।

मात्र आसन-प्राणायाम हानि

दीहयालंतं कुणदि, आसणं पाणायमं जो णिच्चं।
पमादेण सो मुंचदि, स-धम्मज्झाण-मप्पसंतिं।।190।।

अन्वयार्थ-जो-जो **दीहयालंतं**-दीर्घकाल तक **णिच्चं**-नित्य **आसणं**-आसन (व) **पाणायमं**-प्राणायाम को **कुणदि**-करता है **सो**-वह **पमादेण**-प्रमाद से **स-धम्मज्झाण-मप्पसंतिं**-स्व धर्मध्यान व आत्मशांति को **मुंचदि**-त्याग देता है।

देह पोषक संयम च्युत

पाणायामणुरत्तो, सगसरीरं पोसदे जो णिच्चं।
देह-पोसग-साहुस्स, छुट्टदि धम्मज्झाणं तस्स।।191।।

अन्वयार्थ-जो-जो **पाणायामणुरत्तो**-प्राणायाम में अनुरक्त होकर **णिच्चं**-नित्य **सगसरीरं**-स्व शरीर का **पोसदे**-पोषण करता है **तस्स**-उस **देहपोसग-साहुस्स**-देह पोषक साधु का **धम्मज्झाणं**-धर्मध्यान **छुट्टदि**-छूट जाता है।

आत्म धर्म विरोधी

धम्मज्झाण-छलेणं, पाणायामं कुणदि तिसंझाए।
जो सुहकंखिं होच्चा, होज्जप्प-धम्म-विरोही सो।।192।।

अन्वयार्थ-जो-जो **धम्मज्झाण-छलेणं**-धर्मध्यान के छल (बहाने) से **तिसंझाए**-तीनों संध्याकाल में **पाणायामं**-प्राणायाम **कुणदि**-करता है **सो**-वह **सुहकंखिं**-सुखाकांक्षी **होच्चा**-होकर **अप्प-धम्म-विरोही**-आत्म धर्म विरोधी **होज्ज**-हो जाता है।

पदभ्रष्ट

जो तणु-पोसिदुं कुणदि, पाणायामं विम्हरित्तु धम्मं।
लोयप्पसिद्धि-कंखी, होज्ज सग-पदादु भट्ठो सो।।193।।

अन्वयार्थ-जो-जो **तणु-पोसिदुं**-तन के पोषण के लिए **धम्मं**-धर्म को **विम्हरित्तु**-भूलकर **पाणायामं**-प्राणायाम को **कुणदि**-करता है **सो**-वह **लोयप्पसिद्धि-कंखी**-लोकप्रसिद्धि का आकांक्षी **सग-पदादु**-अपने पद से **भट्ठो**-भ्रष्ट **होज्ज**-होता है।

इंद्रियजय अभ्यास

इंदिय-जयं अब्भसदि, णिरुंभदे चित्तं अप्पधम्मम्मि।
तस्स सत्थगा होज्जा, पाणायाम-पच्चाहारा।।194।।

अन्वयार्थ-जो **इंदिय-जयं**-इंद्रियजय का **अब्भसदि**-अभ्यास करता है (व) **अप्पधम्मम्मि**-आत्मधर्म में **चित्तं**-चित्त का **णिरुंभदे**-निरोध करता है **तस्स**-उसके **पाणायाम-पच्चाहारा**-प्राणायाम व प्रत्याहार **सत्थगा**-सार्थक **होज्जा**-होते हैं।

प्रत्याहार

प्रत्याहार स्वरूप

अदिसय-संति-संजुदो, अप्पणाणी य अक्खदमी जोगी।
णिरुंभित्तु सगचित्तं, जत्थ धरेदि पच्चाहारो।।195।।

अन्वयार्थ-अदिसय-संति-संजुदो-अतिशय शांति से संयुक्त **अप्प-णाणी**-आत्मज्ञानी **य**-और **अक्खदमी**-अक्षदमी **जोगी**-योगी **सगचित्तं**-अपने चित्त का **णिरुंभित्तु**-निरोध करके **जत्थ**-जहाँ **धरेदि**-धरता है (वह) **पच्चाहारो**-प्रत्याहार है।

सुपच्चाहारो झाण-सामग्गि-आहरणं मुणेदव्वो।
वेरग्ग-अक्खदमणुच्छाहादीण-कारणं जाण।।196।।

अन्वयार्थ-झाण-सामग्गि-आहरणं-ध्यान सामग्री का आहरण (ग्रहण करना) **सुपच्चाहारो**-सुप्रत्याहार **मुणेदव्वो**-जानना चाहिए (प्रत्याहार) **वेरग्ग-अक्खदमण-उच्छाहादीण-कारणं**-वैराग्य, इंद्रिय दमन व उत्साहादि का कारण **जाण**-जानों।

प्रत्याहार क्यों ?

धारदि पच्चाहारं, पाणायाम-किलेस-णिवित्तीए।
फास-रसण-घाण-चक्खु-कण्ण-चित्तादीण जिणेदुं।।197।।

अन्वयार्थ-योगी **पाणायाम-किलेस-णिवित्तीए**-प्राणायाम से हुई थकान की निवृत्ति के लिए (और) **फास-रसण-घाण-चक्खु-कण्ण-चित्तादीण**-स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु, कर्ण व चित्त आदि के **जिणेदुं**-जीतने के लिए **पच्चाहारं**-प्रत्याहार **धारदि**-धारण करता है।

प्रत्याहार का मूल

गहिदुं पच्चाहारं, विणा महव्वदं ण को वि समत्थो।
पच्चाहार-मूलो हि, सव्वसावज्जजोग-विरयं।।198।।

अन्वयार्थ-महव्वदं-महाव्रत के **विणा**-बिना **को वि**-कोई भी **पच्चाहारं**-प्रत्याहार को **गहिदुं**-ग्रहण करने में **समत्थो**-समर्थ **ण**-नहीं है। **सव्वसावज्जजोग-विरयं**-सर्व सावद्य योग से विरति **हि**-ही **पच्चाहार-मूलो**-प्रत्याहार का मूल है।

उत्तम ध्याता

जुंजरूडो य इंदिय-दमगो सावज्ज-हीण-णिम्मोही।
समजुदो णंदभोगी, जो सो खलु उत्तमो झादू।।199।।

अन्वयार्थ-जो-जो **जुंजरूडो**-परिग्रह से रहित **इंदिय-दमगो**-इन्द्रियों का दमन करने वाला **सावज्ज-हीण-णिम्मोही**-सावद्य हीन, निर्मोही **समजुदो**-समभाव से युक्त **य**-और **णंदभोगी**-आनंद का भोगी है **सो**-वह **खलु**-निश्चय से **उत्तमो**-उत्तम **झादू**-ध्याता है।

समाधि कारण

समाहि-सिद्धि-कारणं, पच्चाहारो भणिदो जिणसमये।
मण्णे वि सुह-धारणा, पच्चाहार-धारण-हेदू।।200।।

अन्वयार्थ-जिणसमये-जिनागम में **पच्चाहारो**-प्रत्याहार को **समाहि-सिद्धि-कारणं**-समाधि की सिद्धि का कारण **भणिदो**-कहा गया है **सुह-धारणा**-शुभ धारणाएँ **वि**-भी **पच्चाहार-धारण-हेदू**-प्रत्याहार के धारण का हेतु **मण्णे**-मानी गई हैं।

धारणा

धारणा स्वरूप

चिंतिज्जदि जत्थ मुहुं, तच्चं धारणा हु झाण-पाणव्व।
झाण-हेदुं धारणं, चित्त-पणिहीए चिंतेज्जा।।201।।

अन्वयार्थ-मुहुं-बार-बार **जत्थ**-जहाँ **तच्चं**-तत्त्व का **चिंतिज्जदि**-चिंतन किया जाता है (वह) **धारणा**-धारणा **झाण-पाणव्व**-ध्यान के प्राण के समान है **चित्त-पणिहीए**-चित्त की एकाग्रता के लिए **हु**-निश्चय से **झाण-हेदुं धारणं**-ध्यान की हेतु धारणा का **चिंतेज्जा**-चिंतन करना चाहिए।

ध्यान स्थान

णडाले णेत्तजुगले, तालुम्मि णासग्गे भाल-मज्झे।
वत्तम्मि कण्णजुगले, णाहि-अंबुजम्मि सिरम्मि सय।।202।।

हिअय-सरसीरुहम्मि य, एग-विसयम्मि हु णिम्मलं चित्तं।
विसय-कसाय-विहीणं, थिरं कज्ज सुद्धभावेहि।।203।।

अन्वयार्थ-**हु**-निश्चय से **णडाले**-ललाट **णेत्तजुगले**-नेत्र युगल **तालुम्मि**-तालु **णासग्गे**-नासाग्र **भाल-मज्झे**-भाल के मध्य **वत्तम्मि**-मुख **कण्णजुगले**-कर्णयुगल **णाहि-अंबुजम्मि**-नाभि कमल **सिरम्मि**-सिर **य**-और **हिअय-सरसीरुहम्मि**-हृदय कमल में (इन दस अवयवों में) **विसय-कसाय-विहीणं**-विषय कषाय से विहीन **णिम्मलं**-निर्मल **चित्तं**-चित्त को **सुद्धभावेहि**-शुद्ध भावों से **सय**-सदा **एग-विसये**-एक विषय में **थिरं**-स्थिर **करेज्ज**-करना चाहिए।

कल्याण हेतु समर्थ

पच्चाहारे णिउणो, सव्व-विकप्प-विहीणो समजुत्तो।
होज्ज अप्पसंलीणो, सग-कल्लाणाय समत्थो य।।204।।

अन्वयार्थ-जो **पच्चाहारे**-**णिउणो**-प्रत्याहार में निपुण **सव्व-विकप्प-विहीणो**-सर्व विकल्प से विहीन **समजुत्तो**-समभाव से युक्त **य**-और **अप्पसंलीणो**-आत्म संलीन है (वह) **सगकल्लाणाय**-अपने कल्याण के लिए **समत्थो**-समर्थ **होज्ज**-होता है।

धारणा फल

धारणा हु खओवसम-हेदू कम्म-कद्दम-विणासगा य।
वड्ढगा सुहसंतीण, अवअच्छेदि चित्तं णिच्चं।।205।।

अन्वयार्थ-**हु**-निश्चय से **धारण**-धारणा **खओवसम-हेदू**-क्षयोपशम का हेतू है **कम्म-कद्दम-विणासगा**-कर्म कर्दम की विनाशक है

णिच्चं-नित्य **सुहसंतीण**-सुख-शांति की **वड्ढगा**-वर्द्धक है **य**-और **चित्तं**-चित्त को **अवअच्छेदि**-आह्लादित करती है।

ध्यान

ध्यान हेतु शुद्धि

दव्व-खेत्त-कालासण-आहार-भाव-सुद्धी आवसिया।
सुह-झाण-हेदु-सुद्धिं, विणा पसत्थ-झाणं कया ण।।206।।

अन्वयार्थ-दव्व-खेत्त-कालासण-आहार-भाव-सुद्धी-द्रव्य, क्षेत्र, काल, आसन, आहार, भाव शुद्धि **आवसिया**-आवश्यक है **सुह-झाण-हेदु-सुद्धिं**-शुभ ध्यान की हेतु-शुद्धि के **विणा**-बिना **पसत्थ-झाणं**-प्रशस्त ध्यान **कया**-कभी भी **ण**-नहीं होता।

प्रशस्त दिशा

पुव्वुत्तर-दिसाइ वा, होच्चा अहिमुहं झायेदि जो सो।
णिच्चं पसंसणीयो, पावेदि सप्फलं झाणस्स।।207।।

अन्वयार्थ-जो-जो **पुव्वुत्तर-दिसाइ वा**-पूर्व या उत्तर दिशा की ओर **अहिमुहं**-अभिमुख **होच्चा**-होकर **झायेदि**-ध्यान करता है **सो**-वह **णिच्चं**-नित्य **पसंसणीयो**-प्रशंसनीय है (और) **झाणस्स**-ध्यान के **सप्फलं**-सत्फल को **पावेदि**-प्राप्त करता है।

दिशा प्रभाव

मोहंतगा य पुव्वा, विग्घंतगा उदीणा जिणुत्ता हु।
दक्खिणा पण्णंतगा, सुक्खंतगा दिसा पडीणा।।208।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय से **पुव्वा**-पूर्व दिशा **मोहंतगा**-मोहांतक **उदीणा**-उत्तर दिशा **विग्घंतगा**-विघ्नांतक **दक्खिणा**-दक्षिण दिशा **पण्णंतगा**-

प्रज्ञांतक **य**-और **पडीणा**-पश्चिम **दिसा**-दिशा **सुक्खंतगा**-सुखांतक **जिणुत्ता**-जिनेंद्र प्रभु के द्वारा कही गई है।

गुणस्थानों में ध्यान व शुभ भावना

पाहण्णेण जिणुत्ता, झाणसिद्धी अपमत्तादीसुं च।
उवयारेण पमत्ते, सुभावणा अविरद-देसेसु।।209।।

अन्वयार्थ-उवयारेण-उपचार से **पमत्ते**-प्रमत्त गुणस्थान में **च**-और **पाहण्णेण**-प्रधानता से **अपमत्तादीसुं**-अप्रमत्त आदि गुणस्थानों में **झाणसिद्धी**-ध्यान की सिद्धि **जिणुत्ता**-जिनेन्द्र भगवान् के द्वारा कही गई है **अविरद-देसेसु**-अविरत और देशविरत गुणस्थान में **सुभावणा**-शुभ भावना है।

संहनन आवश्यक

पढम-संहणण-जुत्तो, सुक्क-झायेदुं समत्थो जोगी।
जो सो हु मोक्ख-पत्तो, वर-संहणणं विणा ण सिवो।।210।।

अन्वयार्थ-पढम-संहणण-जुत्तो-प्रथम संहनन से युक्त **जो**-जो **जोगी**-योगी **सुक्क-झायेदुं**-शुक्ल ध्यान में **समत्थो**-समर्थ है **सो**-वह **हु**-निश्चय से **मोक्ख-पत्तो**-मोक्ष का पात्र है। **वर-संहणणं**-श्रेष्ठ संहनन के **विणा**-बिना **सिवो**-मोक्ष **ण**-नहीं है।

उपशम श्रेणी हेतु संहनन

उवसम-सेणि-आरुहिदु-मादि-ति-संहणण-जुत्ता समत्था।
इदर-संहणणेहिं च, सेणि-आरोहण-मसंभवो।।211।।

अन्वयार्थ-उवसम-सेणि-आरुहिदुं-उपशम श्रेणी पर चढ़ने में **आदि-ति-संहणण-जुत्ता**-आदि के तीन संहनन से युक्त (जीव) **समत्था**-समर्थ हैं **च**-और **इदर-संहणणेहिं**-इतर संहननों से **सेणि-आरोहणं**-श्रेणी पर आरोहण **असंभवो**-असंभव है।

ध्यान धुरंधर

पंचिंदिय-विसयादो, विरत्तो समिदूणं कसायं जो।
सुद्धप्प-संलीणो हु, झाण-धुरंधरो होज्जा सो।।212।।

अन्वयार्थ-जो-जो **पंचिंदिय-विसयादो**-पंचेन्द्रिय के विषयों से **विरत्तो**-विरक्त है **सुद्धप्प-संलीणो**-शुद्धात्मा में संलीन है **सो**-वह **कसायं**-कषाय का **समिदूणं**-शमन कर **हु**-निश्चय से **झाण-धुरंधरो**-ध्यान धुरंधर **होज्जा**-होता है।

शुक्ल ध्यान प्राप्तक

वेरग्ग-समभावेहि, परिसहजय-संजमेहि समदाए।
धम्मं सुक्कज्झाणं, णिच्चं भव्वुल्ला पावंति।।213।।

अन्वयार्थ-वेरग्ग-समभावेहि-वैराग्य, समभाव **परिसहजय-संजमेहि**-परीषहजय, संयम (और) **समदाए**-समता के द्वारा **भव्वुल्ला**-भव्य जीव **णिच्चं**-नित्य **धम्मं**-धर्म (व) **सुक्कज्झाणं**-शुक्ल ध्यान **पावंति**-प्राप्त करते हैं।

ध्यान सामर्थ्य

पक्खालिदूण जोगी, तिव्व-रायद्देसं चित्तपंकं।
णिय-अप्पं पस्सेदुं, समत्था होज्जा झाणेणं।।214।।

अन्वयार्थ-जोगी-योगी **झाणेणं**-ध्यान के द्वारा **तिव्व-रायद्देसं**-तीव्र राग-द्वेष रूपी **चित्तपंकं**-चित्त पंक का **पक्खालिदूण**-प्रक्षालन करके **णिय-अप्पं**-निज आत्मा को **पस्सेदुं**-देखने में **समत्था**-समर्थ **होज्जा**-होते हैं।

भव-तण-भोय-विरत्तो, णिम्मल-पसत्थ-भाव-जुदो जो सो।
रागाइ-मुज्झिय झाण-खडगेण णस्सदि कम्म-रिउं।।215।।

अन्वयार्थ-जो-जो **भव-तण-भोय-विरत्तो**-संसार, शरीर और भोगों से विरक्त है **णिम्मल-पसत्थ-भाव-जुदो**-निर्मल प्रशस्त भाव से युक्त है **सो**-वह **रागाइं**-रागादि को **उज्झिय**-त्यागकर **झाण-खडगेण**-ध्यान रूपी खड़ग के द्वारा **कम्म-रिउं**-कर्म रूपी शत्रु का **णस्सदि**-नाश करता है।

स्थिर चित्त में निजावलोकन

थिर-णीरम्मि हु पाणी, जह सक्केदि पस्सिदुं णियबिंबं।
तह जोगी थिर-चित्ते, सव्वदा सुद्धप्पसरूवं।।216।।

अन्वयार्थ-जह-जिस प्रकार **थिर-णीरम्मि**-स्थिर नीर में **पाणी**-प्राणी **णियबिंबं**-निज बिंब **पस्सिदुं**-देखने में **सक्केदि**-समर्थ होता है **तह**-उसी प्रकार **जोगी**-योगी **हु**-निश्चय से **थिर-चित्ते**-स्थिर चित्त में **सव्वदा**-सर्वदा **सुद्धप्पसरूवं**-शुद्धात्म स्वरूप को (देखने में समर्थ होता है)।

कषाय शमन बिना ध्यान नहीं

कसायिंधण-मग्गीव-विज्जमाणा सुहा भावा चित्ते।
डहंति पडिखणं तेण, सह अप्पझाणं संभवो ण।।217।।

अन्वयार्थ-अग्गीव-अग्नि के समान **चित्ते**-चित्त में **विज्जमाणा**-विद्यमान **सुहा**-शुभ **भावा**-भाव **कसायिंधणं**-कषाय रूपी ईंधन को **पडिखणं**-प्रतिक्षण **डहंति**-जलाते हैं **तेण**-उनके (कषाय के) **सह**-साथ **अप्पझाणं**-आत्मध्यान **संभवो**-संभव **ण**-नहीं है।

ध्यान से दु:खांत

सुझाण-वइस्साणरो, डहदि संसारण्ण-मूल-कम्माणि।
ण लहदि तं पुण जोगी, अणंतदुहाणि संसारस्स।।218।।

अन्वयार्थ-सुझाण-वइस्साणरो-सुध्यान रूपी अग्नि **संसारण्ण-मूल-कम्माणि**-संसार रूपी अरण्य के मूल कर्मों को **डहदि**-जलाती है (जो) **जोगी**-योगी **तं**-उसको (ध्यान को) **लहदि**-प्राप्त **ण**-नहीं करता (वह) **पुण**-पुन: **संसारस्स**-संसार के **अणंतदुहाणि**-अनंत दु:खों को (प्राप्त करता है)।

प्रशस्त ध्यान

भव-णीरं सोसेदुं, अक्कोव्व सव्वदा पसत्थ-झाणं।
झाणेणं पणासेदि, भव-दुक्ख-पावाइं जोगी।।219।।

अन्वयार्थ-भव-णीरं-संसार रूपी नीर को **सोसेदुं**-सुखाने में **पसत्थ-झाणं**-प्रशस्त ध्यान **सव्वदा**-सर्वदा **अक्कोव्व**-सूर्य के समान है। **जोगी**-योगी **झाणेणं**-ध्यान के द्वारा **भव-दुक्ख-पावाइं**-संसार के दु:ख व पापों का **पणासेदि**-नाश करता है।

कषाय से संक्लेशता

अग्गिणा सह जलपत्त-मुण्हत्तं गहदि सीदलदमुज्झिय।
कसायेण सह चित्तं, संकिलेसं संतिमुज्झित्तु।।220।।

अन्वयार्थ-अग्गिणा-अग्नि के **सह**-साथ **जलपत्तं**-जलपात्र **सीदलदं**-शीतलता को **उज्झिय**-छोड़कर **उण्हत्तं**-उष्णता को **गहदि**-ग्रहण करता है (उसी प्रकार) **कसायेण**-कषाय के **सह**-साथ **चित्तं**-चित्त **संतिं**-शांति को **उज्झित्तु**-छोड़कर **संकिलेसं**-संक्लेशता को (ग्रहण करता है)।

चतुर्विध ध्यान

झाणं चदुविहं सया, अट्ट-रुद्द-धम्म-सुक्काणि मण्णे।
पढम-बे भव-कारणं, णिव्वाण-हेदू इदराइं।।221।।

अन्वयार्थ-झाणं-ध्यान **सया**-सदा **चदुविहं**-चार प्रकार का **मण्णे**-माना गया है **अट्ट-रुद्द-धम्म-सुक्काणि**-आर्त्त, रौद्र, धर्म और शुक्ल। **पढम-बे**-प्रारंभ के दो ध्यान **भव-कारणं**-संसार के कारण हैं (तथा) **इदराइं**-इतर ध्यान **णिव्वाण-हेदू**-निर्वाण के हेतु हैं।

धर्मध्यान भेद

अण्णा-अवाय-विचयं, विवागो संठाण-विचयं णिच्चं।
चदुविह-धम्मज्झाणं, मोहविणासणत्थं करेज्ज।।222।।

अन्वयार्थ-मोहविणासणत्थं-मोह के विनाश के लिए **णिच्चं**-नित्य **अण्णा-अवाय-विचयं**-आज्ञा विचय, अपाय विचय **विवागो**-विपाक विचय **संठाण-विचयं**-संस्थान विचय (ये) **चदुविहं**-चार प्रकार का **धम्मज्झाणं**-धर्मध्यान **करेज्ज**-करना चाहिए।

आज्ञा विचय

जिणदेवस्स हु अण्णा, तियालम्मि धुवं सच्चं णियमेण।
ण अण्णहा-वादि-जिणो, जिण-अण्णा-चिंतणं पढमं।।223।।

अन्वयार्थ-जिणदेवस्स-जिनदेव की **अण्णा**-आज्ञा **तियालम्मि**-तीनों काल में **णियमेण**-नियम से **धुवं**-ध्रुव **सच्चं**-सत्य है। **हु**-निश्चय से **जिणो**-जिन **अण्णहा-वादि**-अन्यथावादी **ण**-नहीं होते। **जिणअण्णा-चिंतणं**-जिन आज्ञा का चिंतन करना **पढमं**-प्रथम (आज्ञा विचय) धर्मध्यान है।

जिणण्णाणुसारेणं, वत्थु-सरूवस्स चिंतणं णिच्चं।
अण्णा-विचयं झाणं, पुण्ण-कारणं मुणेदव्वं।।224।।

अन्वयार्थ-जिणण्णाणुसारेणं-जिन आज्ञा के अनुसार **वत्थु-सरूवस्स**-वस्तु स्वरूप का **णिच्चं**-नित्य **चिंतणं**-चिंतन करना **पुण्ण-कारणं**-पुण्य का कारण **अण्णा-विचयं**-आज्ञा विचय **झाणं**-ध्यान **मुणेदव्वं**-जानना चाहिए।

सियवायेण चिंधणं, पुव्ववर-विरोहादि-दोस-रहिदं।
सुद-तित्थं चिंतेज्जा, सव्वण्हु-जिणिंदेण कहिदं।।225।।

अन्वयार्थ-सियावायेण-स्याद्वाद से **चिंधणं**-चिह्नित **पुव्ववर-विरोहादि-दोस-रहिदं**-पूर्वापर विरोध आदि दोषों से रहित **सव्वण्हु-जिणिंदेण**-सर्वज्ञ जिनेन्द्रदेव के द्वारा **कहिदं**-कहे गए **सुद-तित्थं**-श्रुततीर्थ का **चिंतेज्जा**-चिंतन करना चाहिए।

अपाय विचय

केहिं हु कारणेहिं, लहंति दारुण-दुहाणि घोर-भवे।
अवाय-विणासणत्थं, तच्च-चिंतण-मवाय-विचयं।।226।।

अन्वयार्थ-जीव **केहिं**-किन **कारणेहिं**-कारणों से **घोर-भवे**-घोर संसार में **दारुण-दुहाणि**-दारुण दु:खों को **लहंति**-प्राप्त करता है (इस प्रकार) **अवाय-विणासणत्थं**-अनिष्ट के विनाश के लिए **तच्च-चिंतणं**-तत्त्व का चिंतन करना **हु**-निश्चय से **अवाय-विचयं**-अपाय विचय धर्मध्यान है।

विवेग-बुद्धीए तह, वेरग्ग-णाण-संजम-तवादीहि।
संसार-ताव-समणं, चिंतेज्जा खलु भव्व-जीवा।।227।।

अन्वयार्थ-विवेग-बुद्धीए-विवेक बुद्धि **वेरग्ग-णाण-संजम-तवादीहि तहा**-वैराग्य, ज्ञान, संयम तथा तप आदि के द्वारा **भव्व-**

जीवा-भव्य जीवों को **खलु**-निश्चय से **संसार-ताव-समणं**-संसार ताप के शमन का **चिंतेज्जा**-चिंतन करना चाहिए।

विपाक विचय

पत्तेयं जीवो सय, लहदे फलाइं स-कद-कम्माणं।
णाणावरणादीणं, फल-चिंतणं विवाग-विचयं।।228।।

अन्वयार्थ-पत्तेयं-प्रत्येक **जीवो**-जीव **सय**-सदा **सकद-कम्माणं**-स्वकृत कर्मों के **फलाइं**-फलों को **लहदे**-प्राप्त करता है। **णाणावरणादीणं**-ज्ञानावरण आदि (कर्मों के) **फल-चिंतणं**-फल का चिंतन **विवाग-विचयं**-विपाक विचय (धर्मध्यान) है।

कम्मोदयो विवागो, पुव्व-कद-कम्म-फलाणि भुंजंते।
सुह-दुह-रूवाणि घोर-संसारे भमंते पाणी।।229।।

अन्वयार्थ-कम्मोदयो-कर्म का उदय **विवागो**-विपाक है। **पाणी**-प्राणी **सुह-दुह-रूवाणि**-सुख-दु:ख रूप **पुव्व-कद-कम्म-फलाणि**-पूर्वकृत कर्म के फलों को **भुंजंते**-भोगते हैं (और) **घोर-संसारे**-घोर संसार में **भमंते**-परिभ्रमण करते हैं।

सिंचेदि भव-रुक्खं हु, मिच्छत्तादि-कम्म-णीरेण सया।
णिम्मूलं करिदुं तं, तच्च-चिंतणं करेज्ज भवी।।230।।

अन्वयार्थ-जीव **हु**-निश्चय से **मिच्छत्तादि-कम्म-णीरेण**-मिथ्यात्व आदि कर्म रूप जल से **सया**-सदा **भव-रुक्खं**-संसार रूप वृक्ष का **सिंचेदि**-सिंचन करता है **तं**-उसे **णिम्मूलं**-निर्मूल **करिदुं**-करने के लिए **भवी**-भव्यों को **तच्च-चिंतणं**-तत्त्व चिंतन **करेज्ज**-करना चाहिए।

संस्थान विचय

जिणवरेहि पणीदस्स, लोयसरूव-चिंतणं संठाणं।
असुह-णिरुंभेदुं सुह-हेदू चिंतदु लोयरूवं।।231।।

अन्वयार्थ-जिणवरेहि-जिनवरों के द्वारा **पणीदस्स**-प्रणीत **लोयसरूव-चिंतणं**-लोक स्वरूप का चिंतन **संठाणं**-संस्थान विचय (धर्मध्यान है) **असुह-णिरुंभेदुं**-अशुभ के निरोध के लिए **सुह-हेदू**-सुख के हेतु **लोयरूवं**-लोक के स्वरूप का **चिंतदु**-चिंतन करना चाहिए।

अकिट्टिमो खलु लोगो, सुपदिट्ठिदो तहा अणाइणिहणो।
चउदह-रज्जुत्तुंगो, ति-वाऊहि वेट्ठिदो जाणह।।232।।

अन्वयार्थ-खलु-निश्चय से **लोगो**-लोक **अकिट्टिमो**-अकृत्रिम **सुपदिट्ठिदो**-सुप्रतिष्ठित **अणाइणिहणो**-अनादिनिधन **चउदह-रज्जुत्तुंगो**-चौदह राजू उत्तुंग **तहा**-तथा **ति-वाऊहि**-तीन वायुओं के द्वारा **वेट्ठिदो**-वेष्टित **जाणह**-जानो।

भमदे इह-लोयम्मि य, जीवो णिच्चं अणाइयालादो।
धम्मेण विणा अणंत-भवेसु लहदि अणंत-दुहाणि।।233।।

अन्वयार्थ-जीवो-जीव **अणाइयालादो**-अनादिकाल से **इहलोयम्मि**-इस लोक में **भमदे**-भ्रमण करता है **य**-और **धम्मेण**-धर्म के **विणा**-बिना **णिच्चं**-नित्य **अणंत-भवेसु**-अनंत भवों में **अणंत-दुहाणि**-अनंत दु:खों को **लहदि**-प्राप्त करता है।

सम्म-णाण-चरित्ताणि, णेयं णिव्वाण-कारणं णियमा।
तं विणा भमदि जीवो, अणाइयालादु इह लोए।।234।।

अन्वयार्थ-सम्म-णाण-चरित्ताणि-सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र **णियमा**-नियम से **णिव्वाण-कारणं**-निर्वाण का कारण **णेयं**-जानना

चाहिए **तं**-उसके **विणा**-बिना **जीवो**-जीव **अणाइयालादु**-अनादिकाल से **इह**-इस **लोए**-लोक में **भमदि**-भ्रमण कर रहा है।

दशविध धर्मध्यान

अक्खिदं दहविह-धम्म-झाण-मजीवुवायवाया विचयं।
अण्णा जीव-विवागा, भव-संठाण-विराग-हेदू।।235।।

अन्वयार्थ-धम्म-झाणं-धर्मध्यान **दहविहं**-दस प्रकार का **अक्खिदं**-कहा गया है **अजीवुवायवाया**-अजीव विचय, उपाय विचय, अपाय विचय **अण्णा**-आज्ञा विचय **जीव-विवागा**-जीव विचय, विपाक विचय **भव-संठाण-विराग-हेदू विचयं**-भव विचय, संस्थान विचय, विराग विचय व हेतु विचय।

धर्मध्यान स्वरूप

अजीवदव्व-चिंतणं, अजीवो मोक्खुवायस्सुवायो य।
भव-कारण-चागस्स हु, अवायो सुद-चिंतण-मण्णा।।236।।

अन्वयार्थ-अजीवदव्व-चिंतणं-अजीव द्रव्य का चिंतन करना **अजीवो**-अजीव विचय **मोक्खुवायस्स**-मोक्ष के उपाय का चिंतन **उवायो**-उपाय विचय **भव-कारण-चागस्स**-संसार के हेतु के त्याग का चिंतन **अवायो**-अपाय विचय **य**-और **सुद-चिंतणं**-श्रुत का चिंतन करना **हु**-निश्चय से **अण्णा**-आज्ञा विचय धर्मध्यान है।

जीव-चिंतणं जीवं, विवागो कम्मुदयुदीरणादीण।
दुहरूव-भवस्स भवो, लोय-सरूवस्स संठाणं।।237।।

अन्वयार्थ-जीव-चिंतणं-जीव का चिंतन करना **जीवं**-जीव विचय **कम्मुदयुदीरणादीण**-कर्म के उदय, उदीरणा आदि का चिंतन **विवागो**-विपाक विचय **दुह-रूव-भवस्स**-दुःखरूप संसार का चिंतन

भवो-भव विचय **लोय-सरूवस्स**-लोक के स्वरूप का चिंतन करना **संठाणं**-संस्थान विचय धर्मध्यान है।

भव-सरीर-भोयादो, विरत्ति-चिंतणं विराग-विचयं च।
तक्कजुद-सिव-हेदूण, चिंतणमालंबणं हेदू।।238।।

अन्वयार्थ-भव-सरीर-भोयादो-संसार, शरीर, भोग से **विरति-चिंतणं**-विरक्ति का चिंतन करना **विराग-विचयं**-विराग विचय **च**-और **तक्कजुद-सिव-हेदूण**-तर्क से युक्त मोक्ष के हेतुओं का **चिंतणं**-चिंतन करना **आलंबणं**-आलंबन लेना **हेदू**-हेतु विचय धर्मध्यान है।

पिंडस्थादि स्वरूप

मंत-वक्काण जाणह, पदत्थ-मप्प-चिंतणं पिंडत्थं।
रूवत्थं जिणिंदस्स, रूवादीदं सिव-रूवस्स।।239।।

अन्वयार्थ-मंत-वक्काण-मंत्र वाक्यों का (चिंतन करना) **पदत्थं**-पदस्थ **अप्प-चिंतणं**-आत्मा का चिंतन करना **पिंडत्थं**-पिंडस्थ **जिणिंदस्स**-जिनेन्द्र का चिंतन करना **रूवत्थं**-रूपस्थ और **सिव-रूवस्स**-शिव (सिद्ध) के स्वरूप का चिंतन करना **रूवादीदं**-रूपातीत ध्यान है। (ये भी धर्मध्यान के भेद हैं।)

पंच धारणा

पत्थिवी य अग्गिच्चा, ससणा वारुणी तच्चरूववदी।
पंच-धारणा झेया, कम्मक्खयिदुं चिंतेज्ज सय।।240।।

अन्वयार्थ-पत्थिवी-पार्थिवी **अग्गिच्चा**-आग्नेय **ससणा**-श्वसना **वारुणी**-वारुणी **य**-और **तच्चरूववदी**-तत्त्वरूपवती (ये) **पंच-धारणा**-पाँच धारणा **झेया**-ध्याने योग्य हैं **कम्मक्खयिदुं**-कर्मों के क्षय के लिए (इनका) **सय**-सदा **चिंतेज्ज**-चिंतन करना चाहिए।

शुक्ल ध्यान

पढमं सुक्कज्झाणं, सुहं पिथगत्त-वितक्क-वीयारं।
विदियं सवितक्कं तह, वीयार-रहिदं एगत्तं।।241।।

तिदियं णिम्मल-झाणं, सव्वदा सुहुम-किरिया-पडिपादी।
समुच्छिण्णक्रियं तह, चदुत्थ-सुक्कज्झाणं जाण।।242।।

अन्वयार्थ-पढमं-प्रथम **सुक्कज्झाणं**-शुक्लध्यान **सुहं**-शुभ **पिथगत्त-वितक्क-वीयारं**-पृथक्त्व वितर्क वीचार **विदियं**-द्वितीय शुक्लध्यान **सवितक्कं**-सवितर्क **तह**-तथा **वीयार-रहिदं**-वीचार रहित **एगत्तं**-एकत्व अर्थात् एकत्व वितर्क अवीचार **तिदियं**-तृतीय **णिम्मल-झाणं**-निर्मल शुक्ल ध्यान **सव्वदा**-सर्वदा **सुहुम-किरिया-पडिपादी**-सूक्ष्मक्रिया प्रतिपाती **तह**-तथा **चदुत्थं**-चौथा **सुक्कज्झाणं**-शुक्लध्यान **समुच्छिण्णक्रियं**-समुच्छिन्न क्रिया **जाण**-जानो।

शुभ ध्यान फल

मण्णदे सुहज्झाणं, सासय-सोक्खस्स कारणं णाणी।
सम्मत्ताइ-गुणट्ठा, पागडिदुं समत्थं णिच्चं।।243।।

अन्वयार्थ-णाणी-ज्ञानी **णिच्चं**-नित्य **सुहज्झाणं**-शुभ ध्यान को **सासय-सोक्खस्स**-शाश्वत सुख का **कारणं**-कारण **मण्णदे**-मानता है। शुभ ध्यान **सम्मत्ताइ-गुणट्ठा**-सम्यक्त्व आदि आठ गुणों को **पोगडिदुं**-प्रकट करने में **समत्थं**-समर्थ है।

धम्मं सुक्कज्झाणं, जो सो कुणदि सवियप्पमवियप्पं।
होज्जा तिलोय-णाहो, णासिदूणं तिविह-कम्माणि।।244।।

अन्वयार्थ-जो-जो **सवियप्पं**-सविकल्प वा **अवियप्पं**-अविकल्प **धम्मं**-धर्मध्यान व **सुक्कज्झाणं**-शुक्लध्यान **कुणदि**-करता है **सो**-

वह **तिविह-कम्माणि**-तीन प्रकार के कर्मों का **णासिदूणं**-नाशकर **तिलोय-णाहो**-तीन लोक का नाथ **होज्जा**-होता है।

समाधि

आधि-उपाधि-व्याधि त्याग

जत्थ णियमेण समदे, सया आहि-वाहि-उवाहि-भावा य।
तत्थ सक्का समाही, विणा त-मसंभवो समाही।।245।।

अन्वयार्थ-जत्थ-जहाँ **सया**-सदा **आहि-वाहि-उवाहि-भावा य**-आधि-व्याधि और उपाधि भावों का **समदे**-शमन होता है **तत्थ**-वहाँ **णियमेण**-नियम से **समाही**-समाधि **सक्का**-शक्य है। **तं**-उसके **विणा**-बिना **समाही**-समाधि **असंभवो**-असंभव है।

एकार्थवाची शब्द

णिव्वियप्प-अवत्थप्प-लीणदा सुद्धुवजोगेगट्ठो य।
सरूवायरण-झाणं, अभेयरयणत्तय-समाही।।246।।

अन्वयार्थ-णिव्वियप्प-अवत्था-निर्विकल्प अवस्था **अप्पलीणदा**-आत्मलीनता **सुद्धुवजोगो**-शुद्धोपयोग **सरूवायरण-झाणं**-स्वरूपाचरण ध्यान **अभेयरयणत्तय-समाही य**-अभेद रत्नत्रय और समाधि (ये) **एगट्ठो**-एकार्थवाची हैं।

समाधि का पात्र

खोभ-हीणस्स मिच्छत्तय-कसायुक्कस्स-पावरहिदस्स।
होदि दुल्लह-समाही, भव-तणु-भोय-विरत्तस्स सय।।247।।

अन्वयार्थ-खोभ-हीणस्स-क्षोभ से हीन **मिच्छत्तय-कसायुक्कस्स-पावरहिदस्स**-मिथ्यात्वत्रय, कषाय के उत्कर्ष और पापों से रहित

(तथा) **भव-तणु-भोय-विरत्तस्स**-संसार-शरीर-भोगों से विरक्त के **सय**-सदा **दुल्लह-समाही**-दुर्लभ समाधि **होदि**-होती है।

सम्मदंसणं णाणं, चरियं भेयाभेयं पालदि जो।
सक्को परम-समाहिं, लहेदुं सुद्धसहावं सो।।248।।

अन्वयार्थ-जो-जो **भेयाभेयं**-भेदाभेद **सम्मदंसणं णाणं-चरियं**-सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र का **पालदि**-पालन करता है **सो**-वह **सुद्धसहावं**-शुद्ध स्वभाव (और) **परम-समाहिं**-परम समाधि को **लहेदुं**-प्राप्त करने में **सक्को**-समर्थ है।

समाधि स्वरूप

रयणत्तयं मुणिज्जदि, बोहि-सद्देण हेदू समाहीइ।
णीणणं भवंतरम्मि, समाही बोहि-सक्काराण।।249।।

अन्वयार्थ-बोहि-सद्देण-बोधि शब्द से **समाहीइ**-समाधि का **हेदू**-हेतु **रयणत्तय**-रत्नत्रय **मुणिज्जदि**-जाना जाता है। **भवंतरम्मि**-भवांतर में **बोहि-सक्काराण**-बोधि के संस्कारों को **णीणणं**-ले जाना **समाही**-समाधि है।

समाधि फल

समाहीव णेव को वि, कारणं कम्म-संवर-णिज्जराण।
होज्जा जत्थ समाही, संकमो उदीरणा वि तत्थ।।250।।

अन्वयार्थ-समाहीव-समाधि के समान **को वि**-कोई भी **कम्म-संवर-णिज्जराण**-कर्म के संवर और निर्जरा का **कारणं**-कारण **णेव**-नहीं है **जत्थ**-जहाँ **समाही**-समाधि **होज्जा**-होती है **तत्थ**-वहाँ **संकमो**-संक्रमण (वा) **उदीरणा**-उदीरणा **वि**-भी (होती है)।

मउलि-कंकणोव्व मुत्ति-सुंदरीइ परिणयणस्स समाही।
जो लहदे हु समाहिं, सो मुत्तिसुंदरि-वरो होदि।।251।।

अन्वयार्थ-समाही-समाधि **मुत्ति-सुंदरीइ**-मुक्ति रूपी सुंदरी से **परिणयणस्स**-परिणय के लिए **मउलि-कंकणोव्व**-मुकुट व कंकण के समान है। **जो**-जो **समाहिं**-समाधि को **लहदि**-प्राप्त करता है **सो**-वह **हु**-निश्चय से **मुत्तिसुंदरि-वरो**-मुक्ति सुंदरी का वर **होदि**-होता है।

मुत्तित्थि-जोग्गो वरो, मण्णे महावरो हि संसारम्मि।
महव्वदेण विणा णो, समत्थो होदुं मुत्तिवरं को वि।।252।।

अन्वयार्थ-मुत्तित्थि-जोग्गो-मुक्ति स्त्री के योग्य **वरो**-वर **हि**-ही **संसारम्मि**-संसार में **महावरो**-महावर (महान् वर) **मण्णे**-माना जाता है **महव्वदेण**-महाव्रत के **विणा**-बिना **को वि**-कोई भी **मुत्तिवरं**-मुक्ति का वर **होदुं**-होने में **समत्थो**-समर्थ **णो**-नहीं है।

अष्टांग योग में समाधि

लोयम्मि जाणिज्जदे, मरणं णिच्चं समाहि-सद्देणं।
परं एत्थ गहेज्ज खलु, सुद्धप्प-झाणं समाहीइ।।253।।

अन्वयार्थ-समाहि-सद्देणं-समाधि शब्द से **लोयम्मि**-लोक में **णिच्चं**-नित्य **मरणं**-मरण **जाणिज्जदे**-जाना जाता है **परं**-किन्तु **एत्थ**-यहाँ **समाहीइ**-समाधि शब्द से **खलु**-निश्चय से **सुद्धप्प-झाणं**-शुद्धात्म ध्यान को **गहेज्ज**-ग्रहण करना चाहिए।

विकारी भाव त्याग

सोग-कोह-माण-लोह-भय-तण्हा-काम-मायादी तहा।
विणा चागेणं हु ठिद-पण्णो असंभवो जाणेह।।254।।

अन्वयार्थ-सोग-कोह-माण-लोह-भय-तण्हा-काम-मायादी तहा-शोक, क्रोध, मान, लोभ, भय, तृष्णा, काम तथा मायादि को

चागेणं-त्यागे **विणा**-बिना **हु**-निश्चय से **ठिद-पण्णो**-स्थित प्रज्ञ **असंभवो**-असंभव **जाणेह**-जानो।

स्थितप्रज्ञ-समाधिभाव-पात्र

सुह-ठिद-पण्णं विणा हु, सक्को लहिदुं समाहि-भावं णो।
फल-मुत्तुंग-ताडादु, जह बालो णो समत्थो तह।।255।।

अन्वयार्थ-योगी **हु**-निश्चय से **सुह-ठिद-पण्णाए**-शुभ स्थित प्रज्ञ के **विणा**-बिना **समाहि-भावं**-समाधि भाव को **लहिदुं**-प्राप्त करने में **तह**-उसी प्रकार **सक्को**-समर्थ **णो**-नहीं है **जह**-जिस प्रकार **बालो**-बालक **उत्तुंग-ताडादु**-उत्तुंग ताड़ के वृक्ष से **फलं**-फल को प्राप्त करने में **समत्थो**-समर्थ **णो**-नहीं है।

फासेदुं-मेरुं जह, ठावंतो महीइ णरो सक्को ण ।
तहा विणा ठिद-पण्णं, सक्को णो लहिदुं समाहिं।।256।।

अन्वयार्थ-**जह**-जिस प्रकार **महीइ**-पृथ्वी पर **ठावंतो**-स्थित होता हुआ **णरो**-मनुष्य **मेरुं**-मेरु को **फासिदुं**-स्पर्श करने में **सक्को**-समर्थ **णो**-नहीं है **तहा**-उसी प्रकार **ठिद-पण्णं**-स्थिति प्रज्ञ के **विणा**-बिना **समाहिं**-समाधि को **लहिदुं**-प्राप्त करने में **सक्को**-समर्थ **णो**-नहीं है।

आत्मगुणभोक्ता

लीणो समाहीइ जो, अण्ण-पदत्थादो अणभिण्णो सो।
भुंजदि परमणंदेण, सुद्धप्पसहजगुणा मेत्तं।।257।।

अन्वयार्थ-**जो**-जो **समाहीइ**-समाधि में **लीणो**-लीन है **अण्ण-पदत्थादो**-अन्य पदार्थों से **अणभिण्णो**-अनभिज्ञ है **सो**-वह **परमणंदेण**-परम आनंद के साथ **मेत्तं**-मात्र **सुद्धप्पसहजगुणा**-शुद्धात्म सहज गुणों को **भुंजदि**-भोगता है।

समाधि बिना मोक्ष नहीं

सिवं जासी जे के वि, अणंत-जीवा णासित्तु कम्माणि।
समाहि-फलं हि जाणह, समाहिं विणा ण णिव्वाणं।।258।।

अन्वयार्थ-कम्माणि-कर्मों का **णासित्तु**-नाश करके **जे के वि**-जो कोई भी **अणंत-जीवा**-अनंत जीव **सिंव**-मोक्ष **जासी**-गए (उसे) **समाहि-फलं हि**-समाधि का ही फल **जाणह**-जानो **समाहिं**-समाधि के **विणा**-बिना **णिव्वाणं**-निर्वाण **ण**-नहीं है।

योगियों का सार

जहा खीरस्स सारो, मण्णे घिदं णवणीदं तु लोए।
तहा जोगीण सारो, अप्प-झाणं परमसमाही।।259।।

अन्वयार्थ-लोए-लोक में **जहा**-जिस प्रकार **खीरस्स**-दूध का **सारो**-सार **घिदं णवणीदं तु**-घी अथवा नवनीत **मण्णे**-माना जाता है **तहा**-उसी प्रकार **जोगीण**-योगियों का **सारो**-सार **अप्पझाणं**-आत्मध्यान व **परमसमाही**-परमसमाधि है।

शुक्लध्यान ही परमसमाधि

चदुविह-सुक्कज्झाणं, परमसमाही मण्णे जिणसमये।
परमसमाही णियमा, णियामग-कारणं मोक्खस्स।।260।।

अन्वयार्थ-चदुविह-सुक्कज्झाणं-चार प्रकार का शुक्लध्यान **जिणसमये**-जिनागम में **परमसमाही**-परमसमाधि **मण्णे**-माना गया है। **परमसमाही**-परमसमाधि **णियमा**-नियम से **मोक्खस्स**-मोक्ष का **णियामग-कारणं**-नियामक कारण है।

श्रेणी आरोहकों का ध्यान ही समाधि

उवसामग-खवगा अवि, विणा समाहि-भावं आरुढंति ण।
ताण झाणं समाही, मणिज्जदे हु णाणि-जणेहिं।।261।।

अन्वयार्थ-उवसामग-खवगा-उपशामक व क्षपक **अवि**-भी **समाहि-भावं**-समाधिभाव के **विणा**-बिना (श्रेणी पर) **आरुढंति**-आरूढ़ **ण**-नहीं होते **णाणि-जणेहिं**-ज्ञानीजनों के द्वारा **हु**-निश्चय से **ताण**-उनका **झाणं**-ध्यान **समाही**-समाधि **मणिज्जदे**-माना जाता है।

उपचार से समाधि भाव

अपमत्तगुणट्ठाणे, मण्णे समाहिभाव-मुवयारेण।
तेणं सह हि पमत्तं, तं विणा संजम-ठिदी णत्थि।।262।।

अन्वयार्थ-अपमत्तगुणट्ठाणे-अप्रमत्त गुणस्थान में **उवयारेण**-उपचार से **समाहिभावं**-समाधिभाव **मण्णे**-माना गया है **तेणं**-उसके **सह**-साथ **हि**-ही **पमत्तं**-प्रमत्त (गुणस्थान होता है) **तं**-उसके **विणा**-बिना **संजम-ठिदी**-संयम की स्थिति **णत्थि**-नहीं होती।

अष्टांग योग फल

सुत्थ-णाण-णंद-संति-सुहाण-वड्ढगो अट्ठंग-जोगो।
उच्छाह-सत्ति-समाहि-झाणाणं कारणं जाणह।।263।।

अन्वयार्थ-अट्ठंग-जोगो-अष्टांग योग को **सुत्थ-णाण-णंद-संति-सुहाण-वड्ढगो**-स्वस्थता, ज्ञान, आनंद, शांति और सुख का संवर्धक **उच्छाह-सत्ति-समाहि-झाणाणं कारणं**-उत्साह, शक्ति, समाधि व ध्यान का कारण **जाणह**-जानना चाहिए।

फलगम्मि अट्ठ-भागे, जह सयणाय सेट्ठो णेव णूणे।
तह जोगट्ठंगाइं, समरूवेण उवादेयाणि।।264।।

अन्वयार्थ-**जह**-जिस प्रकार **फलगम्मि**-फलक के **अट्ठ-भागे**-आठ भाग होने पर (वह) **सयणाय**-शयन के लिए **सेट्ठो**-श्रेष्ठ है (किंतु) **णूणे**-न्यून होने पर **णेव**-नहीं **तह**-उसी प्रकार **जोगट्ठंगाइं**-योग के आठ अंग **समरूवेण**-समान रूप से **उवादेयाणि**-उपादेय हैं।

सणहिल्लया समखीर-अट्ठथणादु देदि स-संताणस्स।
मण्णे अट्ठंग-जोगो, हिदकरो सया समरूवेण।।265।।

अन्वयार्थ-जिस प्रकार **सणहिल्लया**-कुतिया **स-संताणस्स**-अपनी संतान के लिए **अट्ठथणादु**-आठों थनों से **समखीरं**-समान रूप से दूध **देदि**-देती है (उसी प्रकार) **अट्ठंग-जोगो**-अष्टांग योग (योग के आठो अंग) **सया**-सदा **समरूवेण**-समान रूप से **हिदकरो**-हितकर **मण्णे**-माना गया है।

अट्ठंग-जोगो सया, अप्पस्स वसु-गुण-कारणं मण्णे।
अट्ठ-कम्म-विणासगो, अट्ठम-पुढवीए हेदू य।।266।।

अन्वयार्थ-**अट्ठंग-जोगो**-अष्टांग योग **सया**-सदा **अप्पस्स**-आत्मा के **वसु-गुण-कारणं**-वसु (आठ) गुणों का कारण **अट्ठ-कम्म-विणासगो**-अष्ट कर्मों का विनाशक **य**-और **अट्ठम-पुढवीए**-अष्टम पृथ्वी का **हेदू**-हेतु है।

सत्तट्ठ-भवेसु अट्ठविह-जोगं जो कुणदि उक्कस्सेण।
जहण्णेण तम्हि भवे, मुत्तिं लहिदुं सो सक्केदि।।267।।

अन्वयार्थ-**जो**-जो **अट्ठविह-जोगं**-आठ प्रकार के योग को **कुणदि**-करता है **सो**-वह **उक्कस्सेण**-अधिक से अधिक **सत्तट्ठ-भवेसु**-

सात-आठ भव में **जहण्णेण**-जघन्य से **तम्हि**-उसी **भवे**-भव में-**मुत्तिं**-मोक्ष को **लहिदुं**-प्राप्त करने में **सक्केदि**-समर्थ होता है।

अप्प-सोअविय-हेदू, संवर-णिज्जराण सुकारणं च।
देदि सारीरिअ-सुहं, कुव्वेदि हु णिम्मलं चित्तं।।268।।

अन्वयार्थ-अष्टांग योग **हु**-निश्चय से **अप्प-सोअविय-हेदू**-आत्मा की पवित्रता का हेतु **च**-और **संवर-णिज्जराण**-संवर, निर्जरा का **सुकारणं**-सुकारण है (यह) **सारीरिअ-सुहं**-शारीरिक सुख को **देदि**-देता है (व) **चित्तं**-चित्त को **णिम्मलं**-निर्मल **कुव्वेदि**-करता है।

अंतिम मंगलाचरण

तित्थयर-उसहाइ सिव-गामी जिणा केवलिदुग-गणहरा।
धरसेणादी सव्वा, आइरिया णमंसामि सया।।269।।

अन्वयार्थ-**तित्थयर-उसहाइ**-तीर्थंकर श्री ऋषभदेव आदि **सिवगामी**-शिवगामी **सव्वा**-सभी **जिणा**-जिनों को **केवलिदुग-गणहरा**-केवलीद्विक (केवलि, श्रुतकेवली) गणधरों को **तह**-तथा **धरसेणादी**-धरसेनादि (सभी) **आइरिया**-आचार्यों को **सया**-सदा **णमंसामि**-नमस्कार करता हूँ।

संति-पाय-जयकित्ती, देसभूसणं भूसणं देसस्स।
बद्धंजलीइ णमामि, सिद्ध-सुदाइरिय-भत्तीए।।270।।

अन्वयार्थ-**संति-पाय-जयकित्ती**-आचार्य शांतिसागर, आचार्य पाय सागर, आचार्य जयकीर्ति **देसस्स**-देश के **भूसणं**-भूषण **देसभूसणं**-देशभूषण आचार्य को **सिद्ध-सुदाइरिय-भत्तीए**-सिद्ध, श्रुत, आचार्य भक्ति से **बद्धंजलीइ**-बद्धांजलि से (हाथ जोड़कर) **णमामि**-नमस्कार करता हूँ।

रट्ठ-संतं सिद्धंत-चक्कवट्टि-सेदपिच्छ-जुद-सूरिं।
णमामि विज्जाणंदं, जस्स किवाइ गंथो पुण्णो।।271।।

अन्वयार्थ-रट्ठ-संतं-राष्ट्रसंत **सिद्धंत-चक्कवट्टि-सेदपिच्छ-जुद-सूरिं**-सिद्धान्त चक्रवर्ती, श्वेतपिच्छीयुत आचार्य **विज्जाणंदं**-विद्यानंद जी को **णमामि**-नमस्कार करता हूँ **जस्स**-जिनकी **किवाइ**-कृपा से **गंथो**-ग्रंथ **पुण्णो**-पूर्ण हुआ।

ग्रंथकार की लघुता

अप्पबुद्धीइ अहवा, सण्णाण-विसुईए पमादेणं।
मए चुक्किदं जदि, ता णाणी पढंतु सोहित्तु।।272।।

अन्वयार्थ-अप्पबुद्धीइ-अल्पबुद्धि **सण्णाण-विसुईए**-सम्यग्ज्ञान की विस्मृति **अहवा**-अथवा **पमादेणं**-प्रमाद से **जदि**-यदि **मए**-मेरे द्वारा **चुक्किदं**-चूक हुई हो **ता**-तो **णाणी**-ज्ञानी **सोहित्तु**-शोधन कर **पढंतु**-पढ़ें।

प्रशस्ति

सावणासिद-पणमीइ, सोमवारम्मि गुरु-दिक्खा-दिवसे।
वद-गदि-परमेट्ठि-गगण-वीरद्धम्मि पुण्णो गंथो।।273।।

अन्वयार्थ-वद-गदि-परमेट्ठि-गगण-वीरद्धम्मि-व्रत-5, गति-4, परमेष्ठि-5, गगन-2 (अंकानां वामतो गति के अनुसार) वीराब्धे 2545 में **सावणासिद-पणमीइ**-श्रावण कृष्ण पंचमी को **सोमवारम्मि**-सोमवार के दिन **गुरु-दिक्खा-दिवसे**-गुरु के दीक्षा दिवस पर **गंथो**-ग्रंथ **पुण्णो**-पूर्ण हुआ।